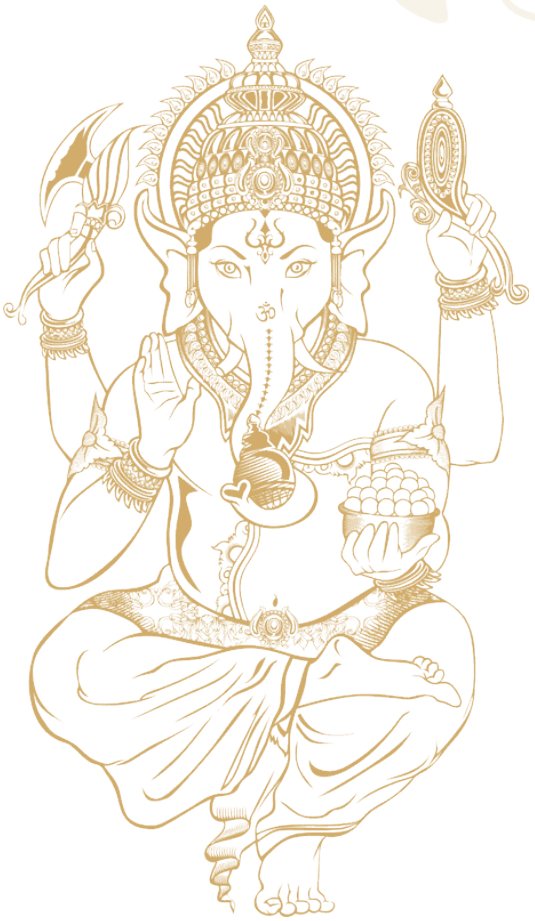

Anil Shantaram thatte

17 Jan 1950

05:17 PM

Malkapur

Model: Web-KundliDarpan **Order No: 121920501**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**17/01/1950**
दिवस	मंगळवार
जन्म समय	**17:17:00 कला**
इष्ट	25:31:23 घटी
स्थान	**Malkapur**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	20:52:00 उत्तर
रेखांश	76:18:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:24:48 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	16:52:12 कला
वेलान्तर	-00:10:01 कला
साम्पातिक वेल	00:37:31 कला
सूर्योदय	07:04:26 कला
सूर्यास्त	18:05:09 कला
दिनमान	11:00:43 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्याचे अंश	03:38:59 मकर
लग्नाचे अंश	23:49:04 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मिथुन – बुध
राशि–स्वामी	**धनु – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**पूर्वाषाढ़ा – 3**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	हर्षण
करण	चतुष्पाद
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	उंदीर
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	फा–फणि
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1871	पौष	27
पंजाबी	संवत : 2006	माघ	5
बंगाली	सन् : 1356	माघ	3
तमिल	संवत : 2006	थाई	4
केरल	कोल्लम : 1125	मकरम	4
नेपाली	संवत : 2006	माघ	4
चैत्रादी	संवत : 2006	माघ	कृष्ण 14
कार्तिकादी	संवत : 2006	पौष	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 14
तिथि समाप्ति वेल _____: 14:51:50
जन्म तिथि _____: 15
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 23:45:14 कला
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय समयी योग _____: व्याघात
योग समाप्ति वेल _____: 12:01:38 कला
जन्म योग _____: हर्षण
सूर्योदय समयी करण _____: शकुनि
करण समाप्ति वेल _____: 14:51:50 कला
जन्म करण _____: चतुष्पाद
भयात _____: 41:25:47
भभोग _____: 57:36:22
भोग्य दशा वेल _____: शुक्र 5 वर्ष 7 मा 0 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मांजर
लग्न _____: धनु
रवि _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगळ _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

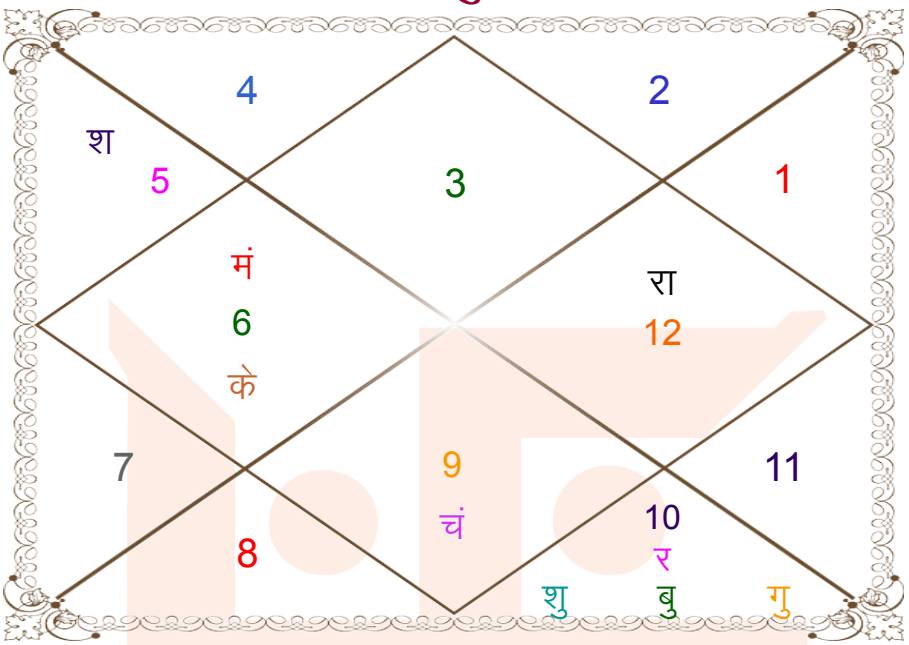

चन्द्र कुंडली

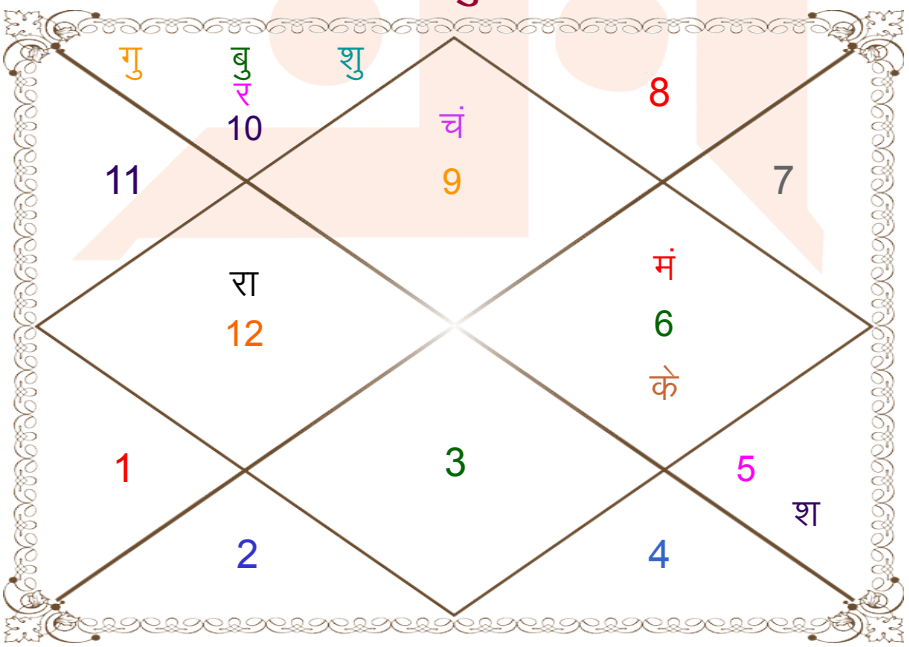

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

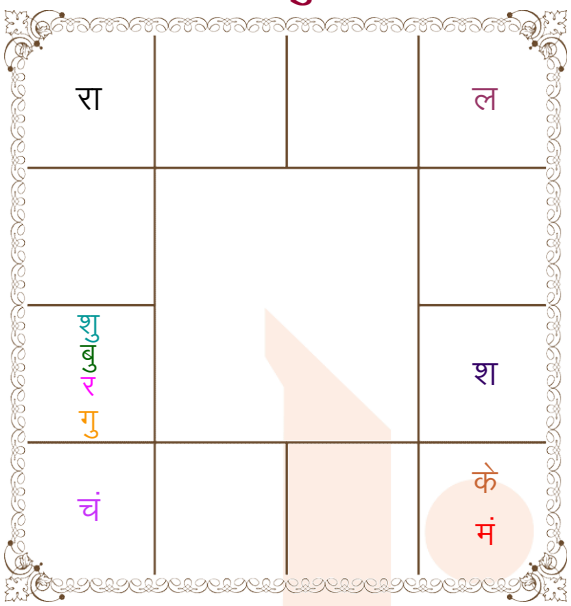

लग्न कुंडली

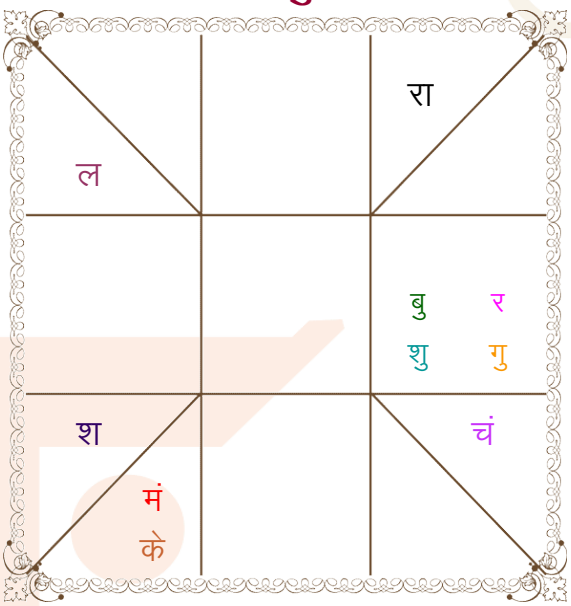

विंशोत्तरी
शुक्र 5वर्ष 7मा 0दि

शुक्र

17/01/1950

19/08/2055

शुक्र	19/08/1955
रवि	18/08/1961
चन्द्र	19/08/1971
मंगळ	19/08/1978
राहु	18/08/1996
गुरु	18/08/2012
शनि	19/08/2031
बुध	18/08/2048
केतु	19/08/2055

योगिनी
सिद्धा 1वर्ष 11मा 13दि

संकटा

01/01/2024

01/01/2032

संकटा	11/10/2025
मंगळा	01/01/2026
पिंगला	12/06/2026
धान्या	10/02/2027
भ्रामरी	01/01/2028
भद्रिका	10/02/2029
उल्का	12/06/2030
सिद्धा	01/01/2032

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	23:49:04	319:32:34	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	———
सूर्य			मक	03:38:59	01:01:07	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			धनु	22:56:37	13:50:30	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगळ			कन्या	14:17:03	00:15:35	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
बुध	व	अ	मक	04:08:04	01:18:03	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	सम राशि
गुरु			मक	17:09:01	00:14:06	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	नीच राशि
शुक्र	व		मक	24:35:19	00:17:11	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगळ	राहु	मित्र राशि
शनि	व		सिंह	25:58:40	00:01:58	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	केतु	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	17:19:05	00:12:35	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु	व		कन्या	17:19:05	00:12:35	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		मिथु	08:51:12	00:02:17	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	———
नेप			कन्या	24:11:52	00:00:03	चित्रा	1	14	बुध	मंगळ	राहु	———
प्लूटो	व		कर्क	24:18:28	00:01:20	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	———
दशम भाव			मीन	17:02:53	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	बुध	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:09:32

लग्न–चलित

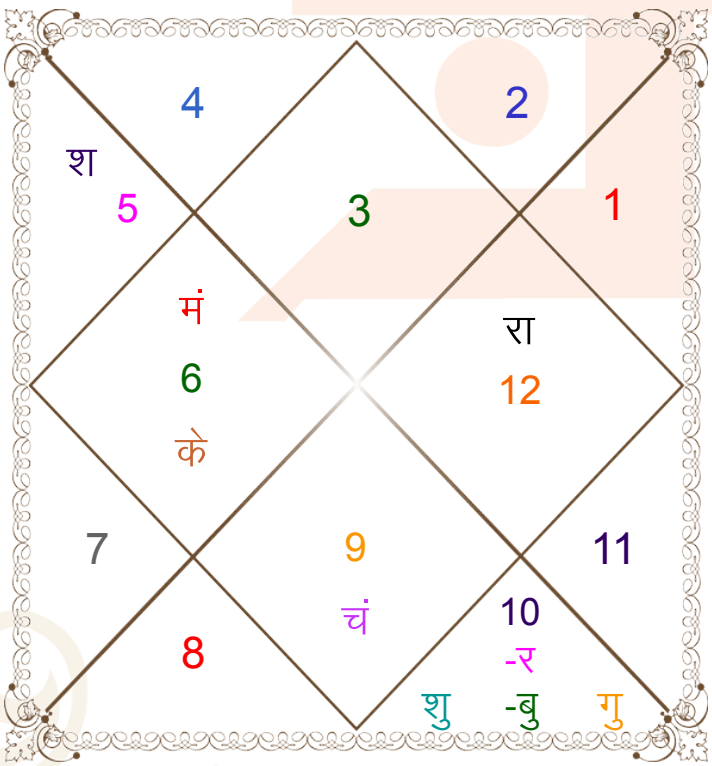

चन्द्र कुंडली

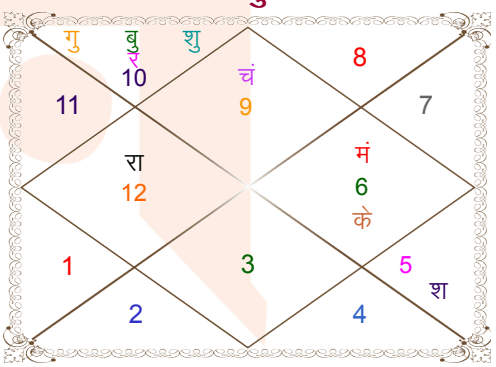

नवमांश कुंडली

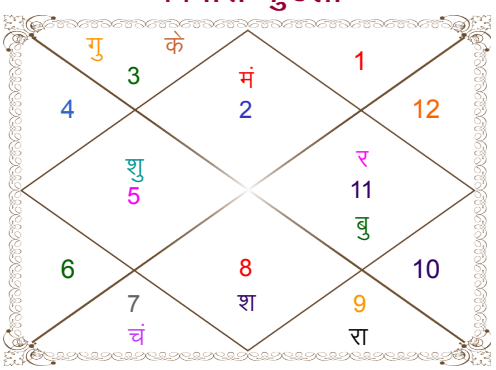

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	07:41:22	मिथुन	23:49:04
2	कर्क	07:41:22	कर्क	21:33:40
3	सिंह	05:25:58	सिंह	19:18:16
4	कन्या	03:10:34	कन्या	17:02:53
5	तुला	03:10:34	तुला	19:18:16
6	वृश्चिक	05:25:58	वृश्चिक	21:33:40
7	धनु	07:41:22	धनु	23:49:04
8	मकर	07:41:22	मकर	21:33:40
9	कुम्भ	05:25:58	कुम्भ	19:18:16
10	मीन	03:10:34	मीन	17:02:53
11	मेष	03:10:34	मेष	19:18:16
12	वृषभ	05:25:58	वृषभ	21:33:40

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	23:49:04
2	कर्क	18:19:07
3	सिंह	15:40:05
4	कन्या	17:02:53
5	तुला	20:46:37
6	वृश्चिक	23:30:46
7	धनु	23:49:04
8	मकर	18:19:07
9	कुम्भ	15:40:05
10	मीन	17:02:53
11	मेष	20:46:37
12	वृषभ	23:30:46

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

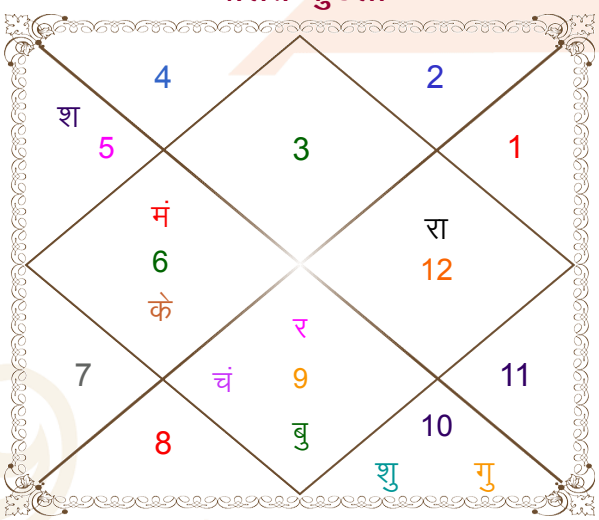

भाव कुंडली

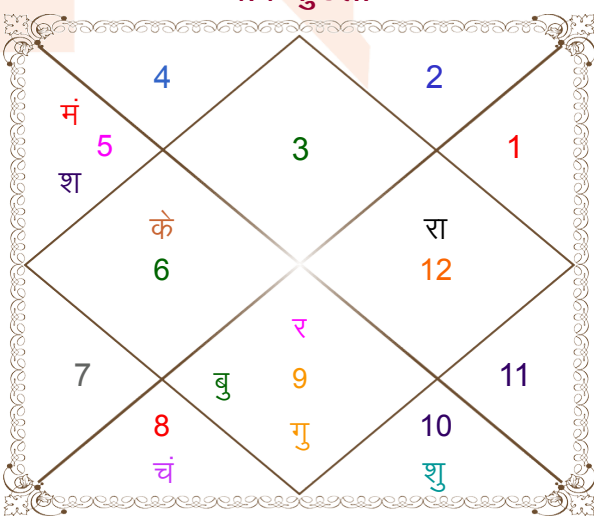

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत	खल	आगमन	1.86	25 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	वृद्ध	शान्त	प्रकाश	3.00	36 %
मंगळ	पुत्र	भ्रातृ	युवा	खल	नेत्रपाणि	0.51	29 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	मृत	विकल	निद्रा	0.00	36 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	भीत	निद्रा	0.24	21 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	बाल	मुदित	निद्रा	5.23	49 %
शनि	आत्मा	आयुष्य	मृत	खल	प्रकाश	1.40	43 %
राहु	———	ज्ञान	युवा	निपीदित	निद्रा	0.00	98 %
केतु	———	मोक्ष	युवा	खल	आगमन	0.00	98 %
एकुण						**12.23**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

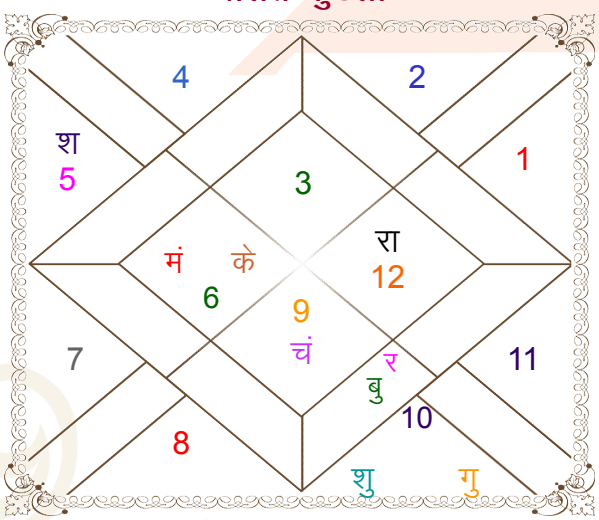

लग्न–चलित

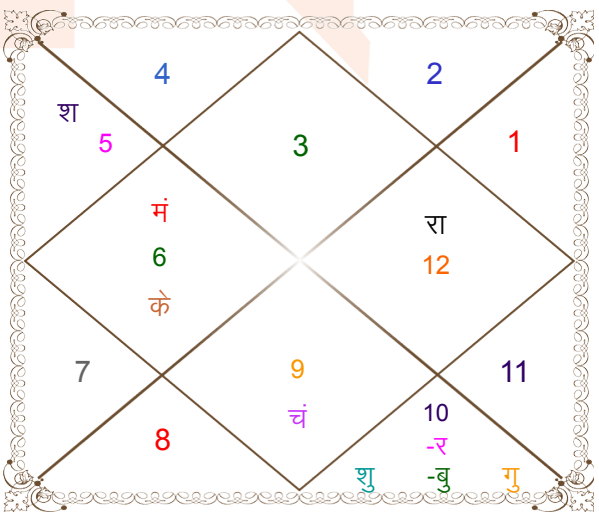

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

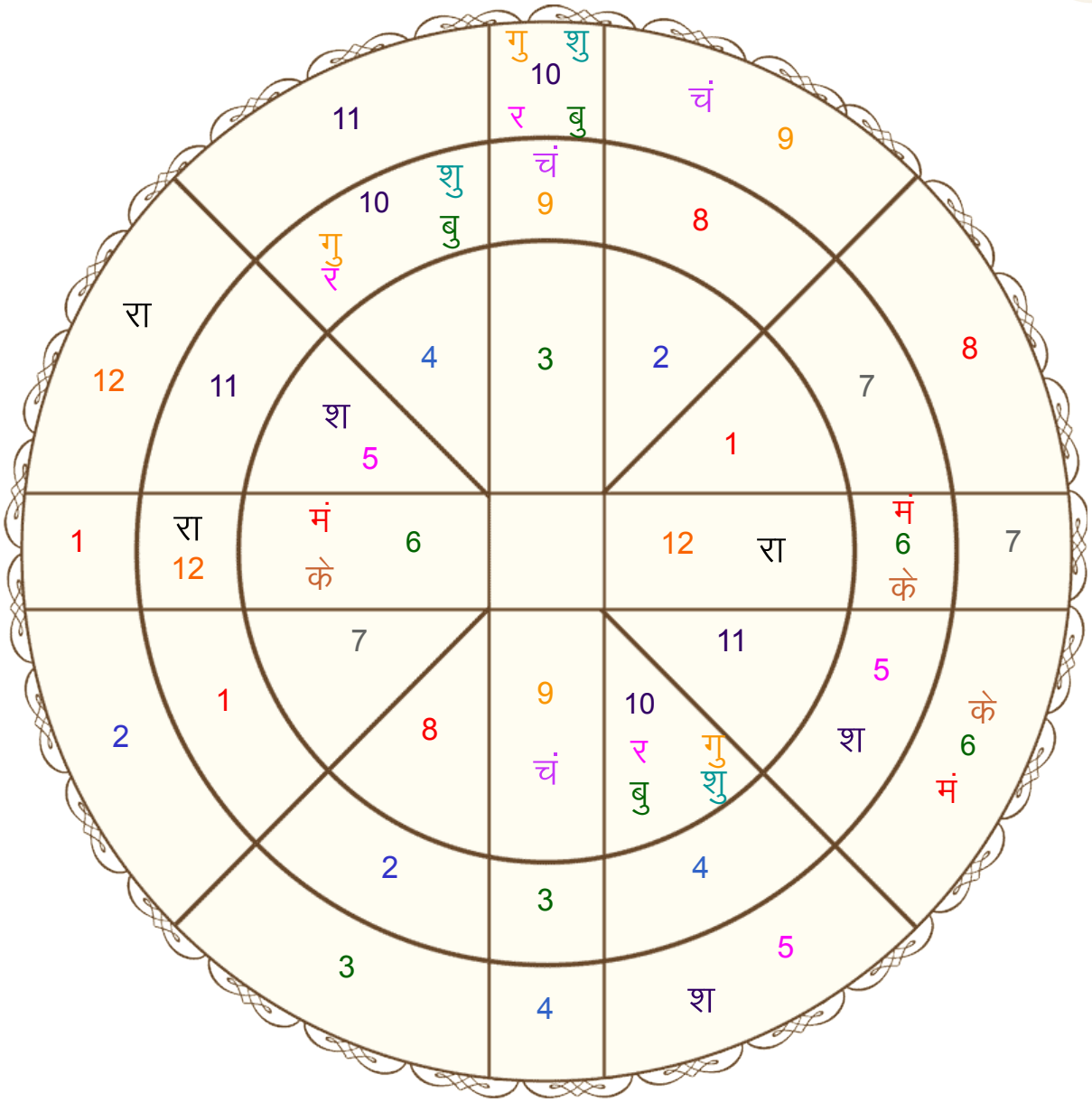

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहेरील वृत्ता पासून अन्तर वृत्ता पर्यंत रवि, चन्द्र व जन्मागं कुंडली मधील ग्रहांची तुलनात्मक स्थिती दर्शावित आहे. कोणत्या ही भावाचा विचार करन्या साठी त्या भावाला प्रकट करनारया तीनी राशिचां विचार करावा.

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा वेल : शुक्र 5 वर्ष 5 महिना 6 दिवस

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	03:44:58	शनि	सूर्य	शनि	केतु
चंद्र		धनु	23:02:36	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य
मंगळ		कन्या	14:23:02	बुध	चंद्र	गुरु	शनि
बुध	व	मक	04:14:04	शनि	सूर्य	शनि	चंद्र
गुरु		मक	17:15:00	शनि	चंद्र	शनि	राहु
शुक्र	व	मक	24:41:18	शनि	मंगळ	राहु	शनि
शनि	व	सिंह	26:04:39	सूर्य	शुक्र	केतु	सूर्य
राहु	व	मीन	17:25:04	गुरु	बुध	बुध	सूर्य
केतु	व	कन्या	17:25:04	बुध	चंद्र	शनि	राहु
हर्ष	व	मिथु	08:57:12	बुध	राहु	गुरु	शनि
नेप		कन्या	24:17:51	बुध	मंगळ	राहु	राहु
प्लूटो	व	कर्क	24:24:27	चंद्र	बुध	राहु	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	23:55:03	बुध	गुरु	बुध	बुध
2	कर्क	18:25:06	चंद्र	बुध	बुध	शनि
3	सिंह	15:46:04	सूर्य	शुक्र	सूर्य	राहु
4	कन्या	17:08:52	बुध	चंद्र	शनि	मंगळ
5	तुला	20:52:36	शुक्र	गुरु	गुरु	शुक्र
6	वृश्चि	23:36:45	मंगळ	बुध	मंगळ	शनि
7	धनु	23:55:03	गुरु	शुक्र	शनि	गुरु
8	मक	18:25:06	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
9	कुंभ	15:46:04	शनि	राहु	शुक्र	चंद्र
10	मीन	17:08:52	गुरु	बुध	बुध	शुक्र
11	मेष	20:52:36	मंगळ	शुक्र	गुरु	बुध
12	वृष	23:36:45	शुक्र	मंगळ	मंगळ	शनि

के.पी. अयनांश : 23:03:32

फॉरच्युना : मिथुन 13:12:41

लग्न कुंडली

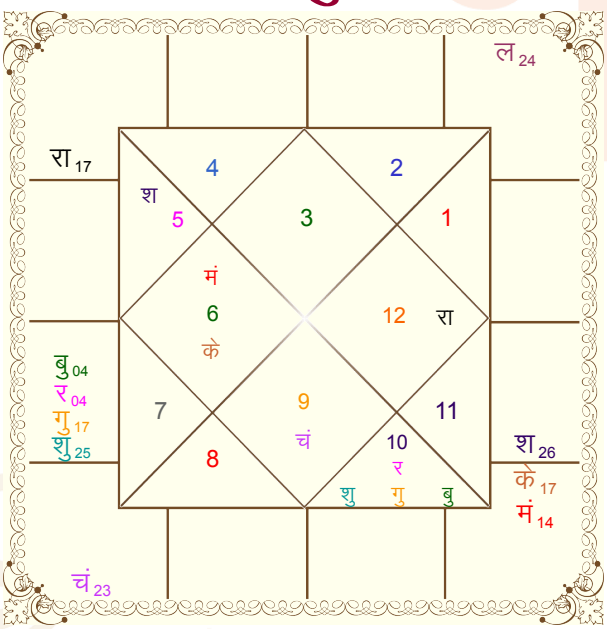

भाव कुंडली

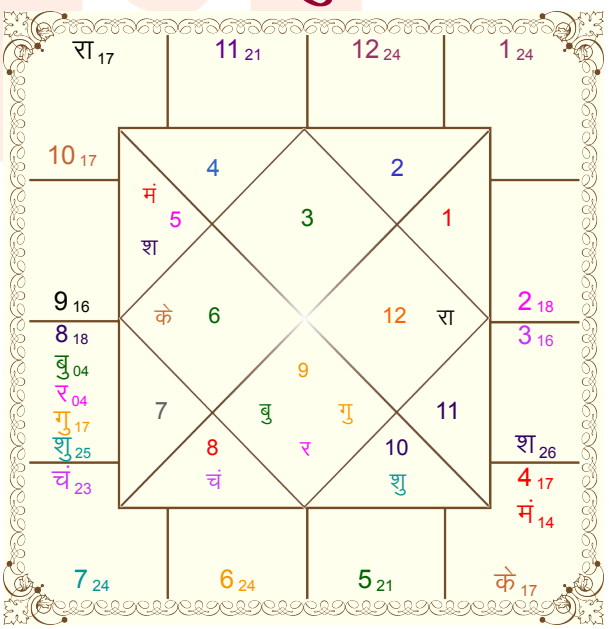

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध– राहु–
2	चंद्र– मंगळ– गुरु– केतु–
3	सूर्य, मंगळ, बुध– शुक्र, शनि,
4	बुध– राहु– केतु,
5	चंद्र– शुक्र– शनि–
6	चंद्र, मंगळ+ गुरु, शुक्र– केतु,
7	सूर्य+ बुध+ गुरु, राहु,
8	चंद्र, शुक्र, शनि+
9	शनि–
10	गुरु– राहु,
11	मंगळ– शुक्र–
12	चंद्र– शुक्र– शनि–

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3, 7+
चंद्र	2- 5- 6, 8, 12-
मंगळ	2- 3, 6+ 11-
बुध	1- 3- 4- 7+
गुरु	2- 6, 7, 10-
शुक्र	3, 5- 6- 8, 11- 12-
शनि	3, 5- 8+ 9- 12-
राहु	1- 4- 7, 10,
केतु	2- 4, 6,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगळ
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शनि

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न चा विस्तार होत आहेत. प्रत्येक कुंडली चा एक विशेष लक्ष्य होत आहेत, खालील पत्रिका मदी वर्णन दिले आहेत. हे कुंडलिया कुटला विषय चा प्रतिनिधित्व करते ते आपण समझु शकते. हे चा अध्ययन मूल जन्मपत्रिका बरोबर केला पाहिजे. पूर्ण लक्ष देउन हे पत्रिकाचा अभ्यास करायचे, कारण ईथे ग्रहांची दृष्टि नाहीं होती. साधारणपणे ग्रहांचा आचरण ते राशि चा भाव पर्यंत सिमित राहतो, ते हे वर्गीय पत्रिकेत स्थित आहे.

रवि कुंडली

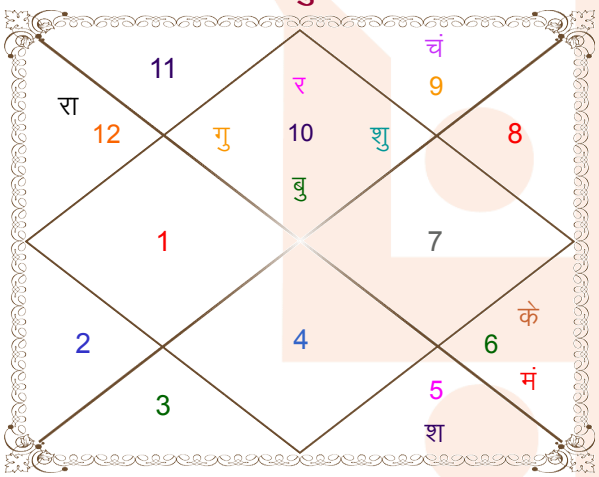

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

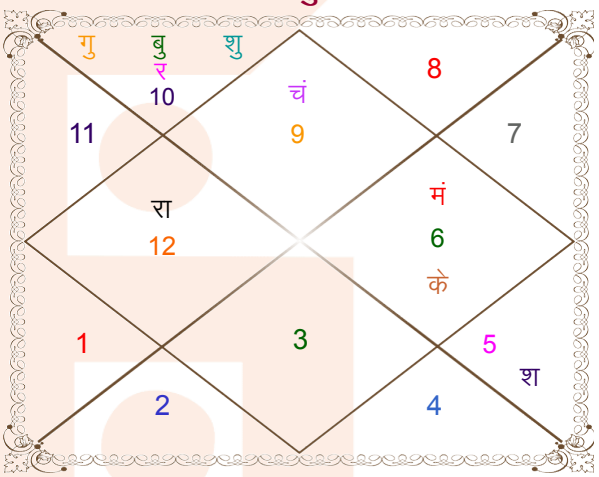

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

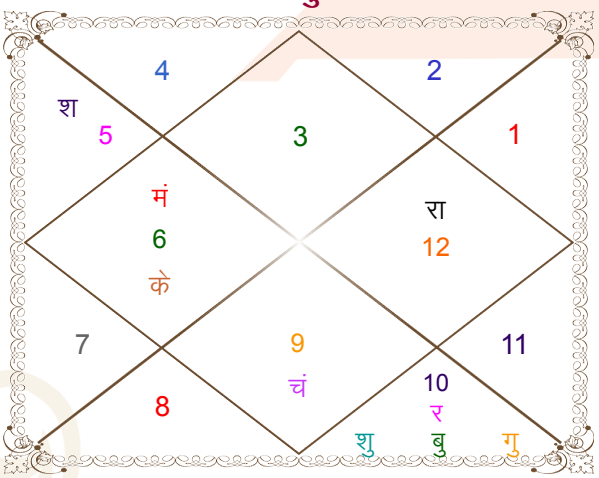

देह विचारः

होरा कुंडली

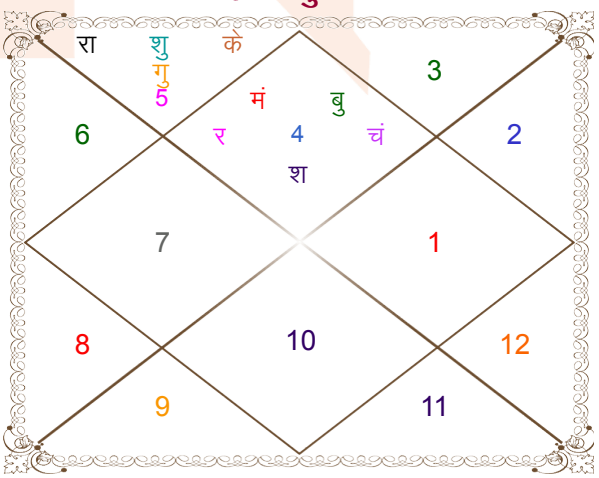

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

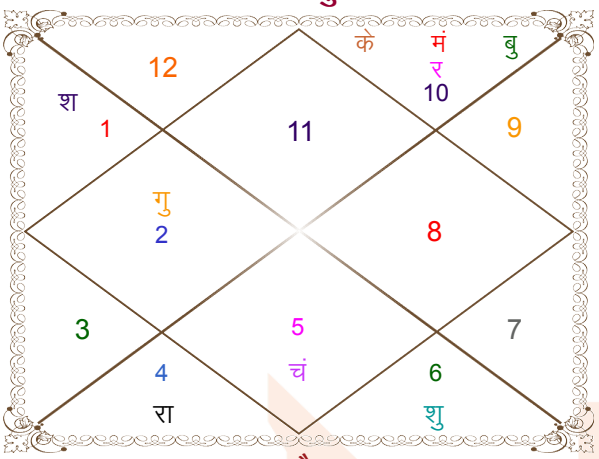

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

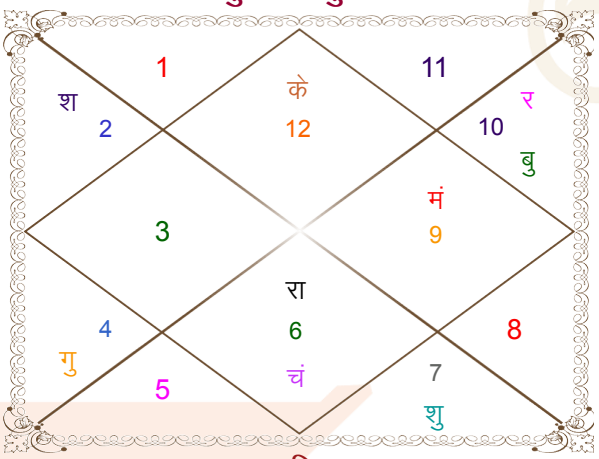

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

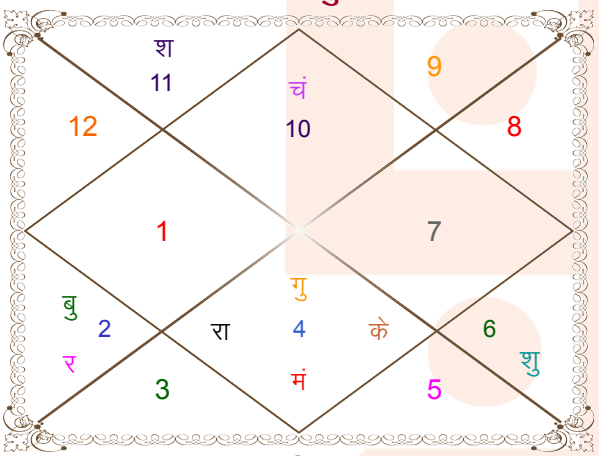

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

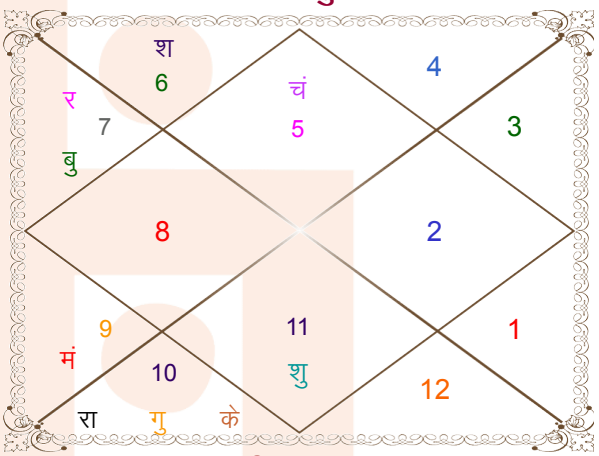

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

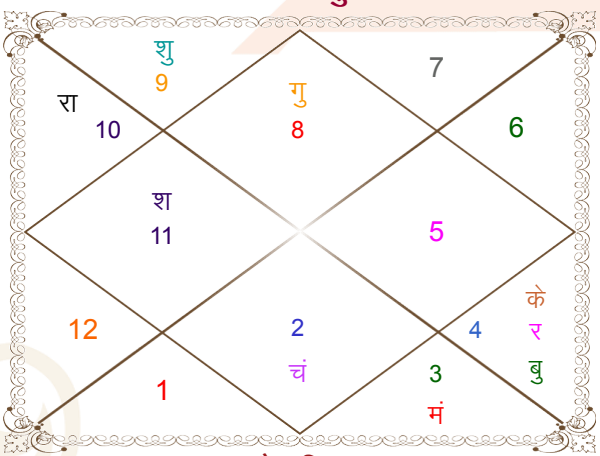

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

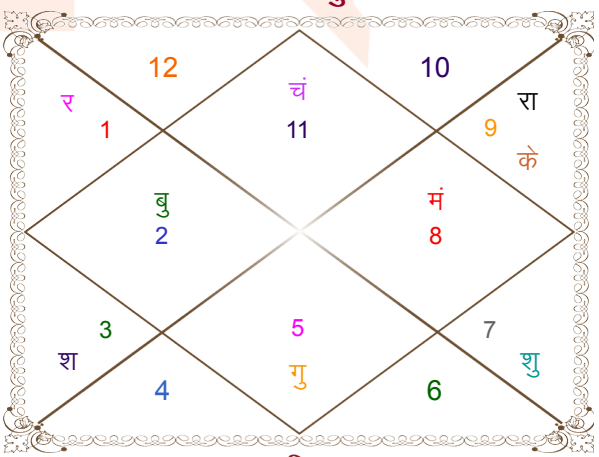

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

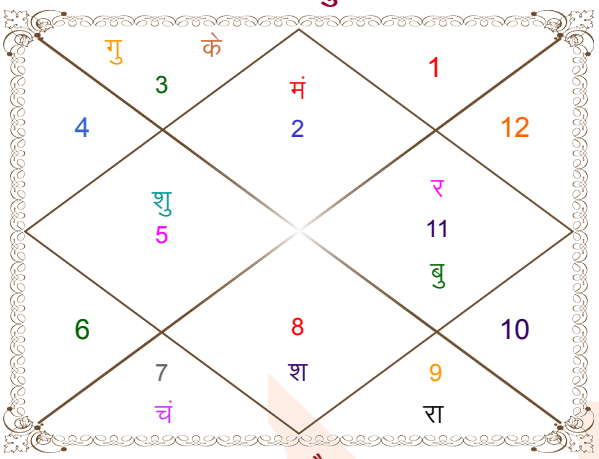

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

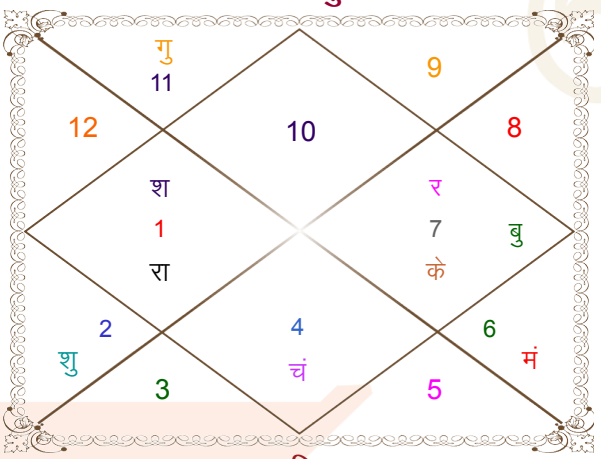

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

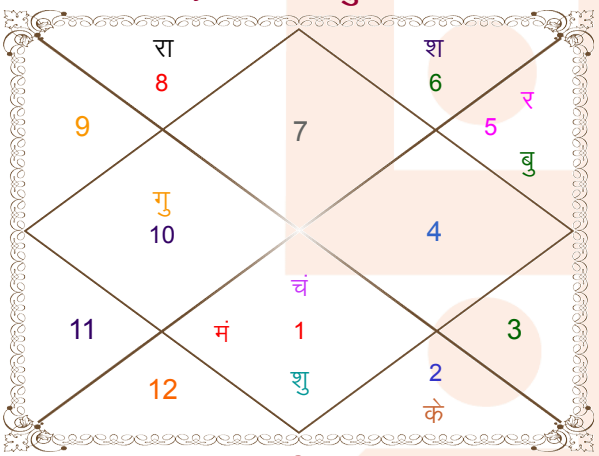

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

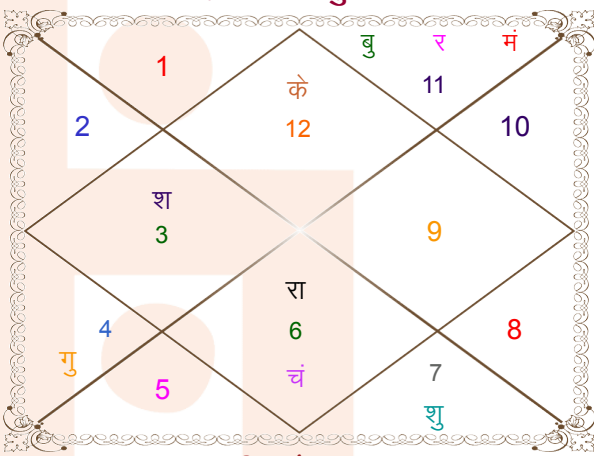

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

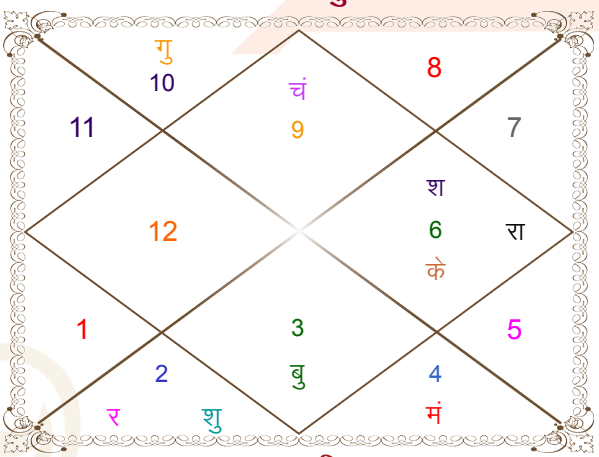

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

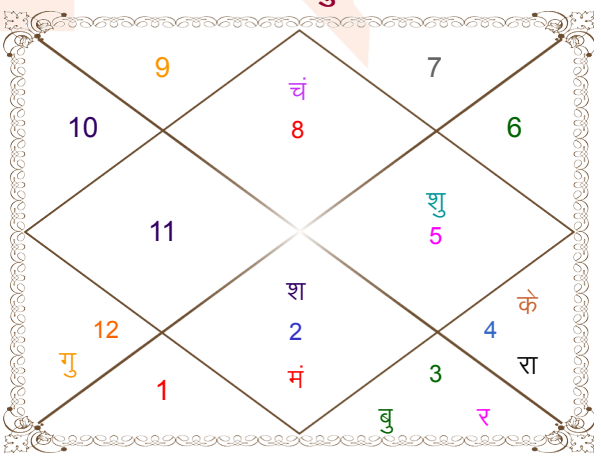

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

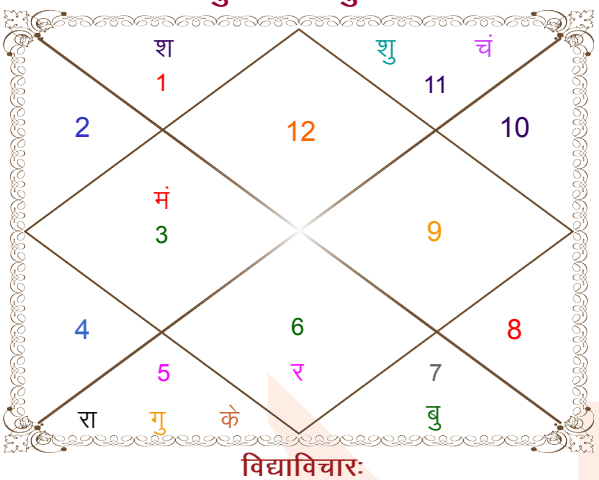

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

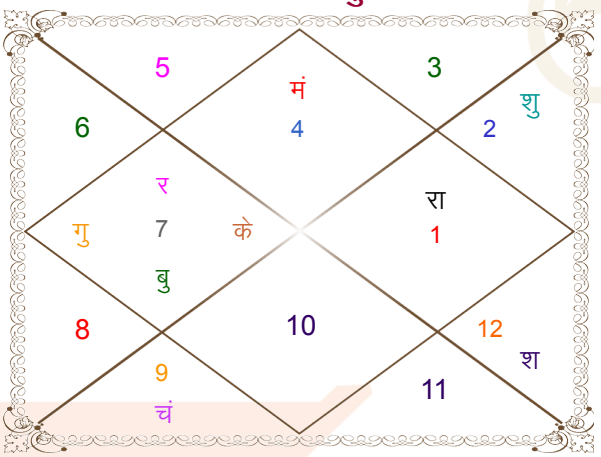

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

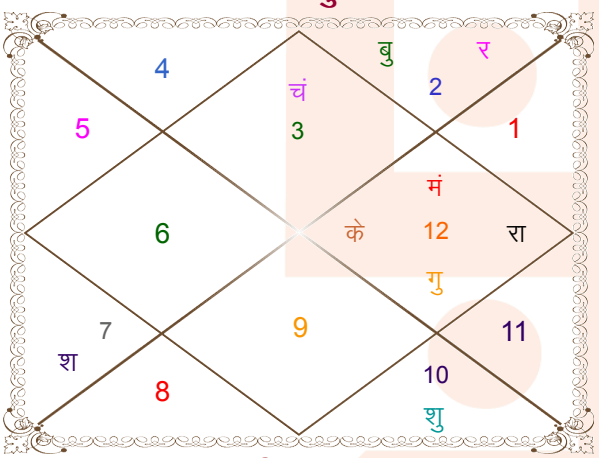

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

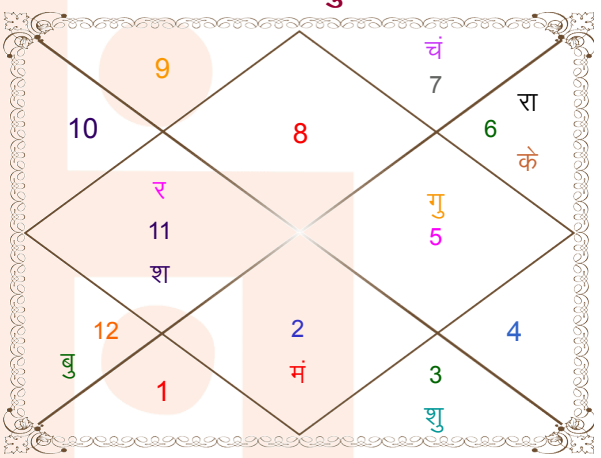

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

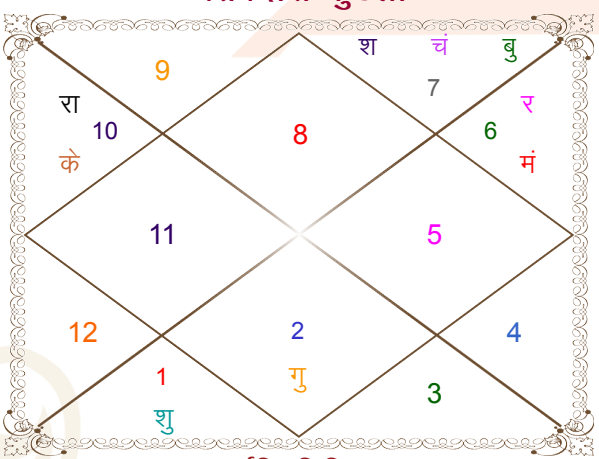

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

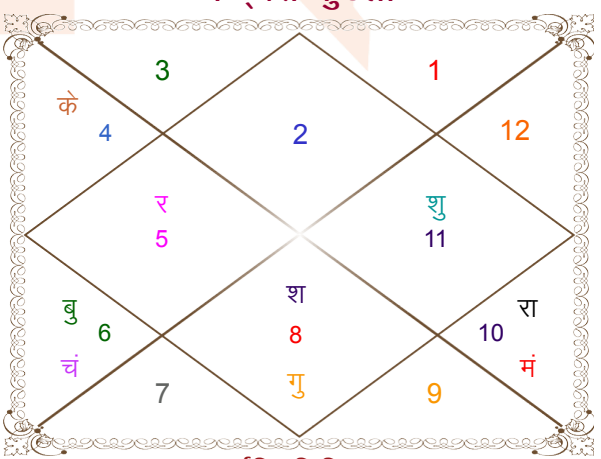

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मिथु	मक	धनु	कन्या	मक	मक	मक	सिंह	मीन	कन्या
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कुंभ	मक	सिंह	मक	मक	वृष	कन्या	मेष	कर्क	मक
चतुर्थांश	मीन	मक	कन्या	धनु	मक	कर्क	तुला	वृष	कन्या	मीन
सप्तमांश	वृश्चि	कर्क	वृष	मिथु	कर्क	वृश्चि	धनु	कुंभ	मक	कर्क
नवमांश	वृष	कुंभ	तुला	वृष	कुंभ	मिथु	सिंह	वृश्चि	धनु	मिथु
दशमांश	मक	तुला	कर्क	कन्या	तुला	कुंभ	वृष	मेष	मेष	तुला
द्वादशांश	मीन	कुंभ	कन्या	कुंभ	कुंभ	कर्क	तुला	मिथु	कन्या	मीन
षोडशांश	धनु	वृष	धनु	कर्क	मिथु	मक	वृष	कन्या	कन्या	कन्या
विंशांश	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	वृष	मिथु	मीन	सिंह	वृष	कर्क	कर्क
चतुर्विंशांश	मीन	कन्या	कुंभ	मिथु	तुला	सिंह	कुंभ	मेष	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	कर्क	तुला	धनु	कर्क	तुला	तुला	वृष	मीन	मेष	तुला
त्रिंशांश	मिथु	वृष	मिथु	मीन	वृष	मीन	मक	तुला	मीन	मीन
खवेदांश	वृश्चि	कुंभ	तुला	वृष	मीन	सिंह	मिथु	कुंभ	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	वृश्चि	कन्या	तुला	कन्या	तुला	वृष	मेष	तुला	मक	मक
षष्ट्यंश	वृष	सिंह	कन्या	मक	कन्या	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	मक	कर्क

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
रवि	0 –––	0 –––	1 –––	1 –––
चन्द्र	1 –––	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
मंगळ	1 –––	1 –––	2 पारिजात	2 भेदक
बुध	0 –––	0 –––	2 पारिजात	3 कुसुम
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शुक्र	1 –––	1 –––	3 उत्तम	5 कन्दुक
शनि	1 –––	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	1 –––	1 –––	2 पारिजात	4 नागपुष्प
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	6.30	16.55	10.05	7.45	8.15	9.25	8.00	13.50	7.40
सप्तवर्ग	7.93	16.40	9.50	7.83	8.68	9.00	9.50	13.13	7.63
दशवर्ग	10.70	17.18	11.48	12.13	9.70	11.28	9.63	11.88	8.28
षोडशवर्ग	9.13	16.23	10.80	11.90	9.00	10.73	9.30	12.50	7.98

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगळ	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगळ	शत्रु	मित्र	———	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	———	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	———	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	अधिमित्र	सम	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अधिमित्र	———	मित्र	अधिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगळ	सम	अधिमित्र	———	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	शत्रु	———	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	———	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	शत्रु	———	सम	अधिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	———	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अधिमित्र	सम	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	———

षट्बल आणि भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	28	17	15	24	4	39	42
सप्तवर्गज बल	54	143	68	38	75	60	64
ओजयुग्मक बल	15	0	0	15	15	15	15
केन्द्र बल	30	60	60	30	30	30	15
द्रेष्काण बल	15	15	0	0	0	15	0
एकुण स्थान बल	142	234	143	106	124	159	136
एकुण दिग्बल	36	28	1	3	8	17	21
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	56	113	56	56	4	4	56
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
महिना बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	6	59	26	57	7	10	24
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
एकुण कालबल	99	195	181	233	122	50	164
एकुण चेष्टाबल	0	0	42	60	6	55	45
एकुण नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
एकुण दृग्बल	-18	-22	-1	-18	-9	-5	-3
एकुण षट्बल	319	487	384	410	285	319	371
रूप षट्बल	5.3	8.1	6.4	6.8	4.8	5.3	6.2
किमान आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
प्रमाण	1.1	1.4	1.3	1.0	0.7	1.0	1.2
तौलनिक स्थिति	4	1	2	5	7	6	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	15.79	7.71	25.56	37.59	4.91	46.35	43.29
कष्ट फल	40.50	49.46	28.06	2.63	54.99	10.38	16.64

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	410	487	319	410	319	384	285	371	371	285	384	319
भावदिग्बल	60	40	10	30	20	50	30	20	20	0	50	40
भावदृष्टि बल	14	98	76	52	20	-27	-22	-7	-11	2	51	62
एकुण भाव बल	484	625	405	492	359	407	294	384	380	287	485	421
रूप भाव बल	8.1	10.4	6.7	8.2	6.0	6.8	4.9	6.4	6.3	4.8	8.1	7.0
तौलनिक स्थिति	4	1	7	2	10	6	11	8	9	12	3	5

उपग्रह आणि आरूढ

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मिथु	23:49:04	––	––	पुनर्वसु	2	7
गुलिक	गु	वृष	06:22:58	––	––	कृतिका	3	3
काल	का	वृष	27:20:09	––	––	मृगशिरा	2	5
मृत्यु	मृ	मक	24:53:12	––	––	धनिष्ठा	1	23
यमघंटक	यम	मीन	17:10:13	––	––	रेवती	1	27
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कुंभ	20:35:33	––	––	पू.भाद्रपद	1	25
धूम	धू	वृष	16:58:59	––	––	रोहिणी	3	4
व्यतिपात	व्य	कुंभ	13:01:01	––	––	शतभिषा	2	24
परिवेश	परि	सिंह	13:01:01	––	––	मघा	4	10
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	16:58:59	––	––	ज्येष्ठा	1	18
उपकेतु	उप	धनु	03:38:59	––	––	मूल	2	19

प्राणपद	:	कर्क	06:25:28	कारकाँश लग्न	:	वृश्चि	23:48:02
भाव लग्न	:	मिथु	06:47:19	होरा लग्न	:	वृश्चि	09:55:38
घटी लग्न	:	कुंभ	19:20:37	वर्णद लग्न	:	कुंभ	03:44:42

उपग्रह कुंडली

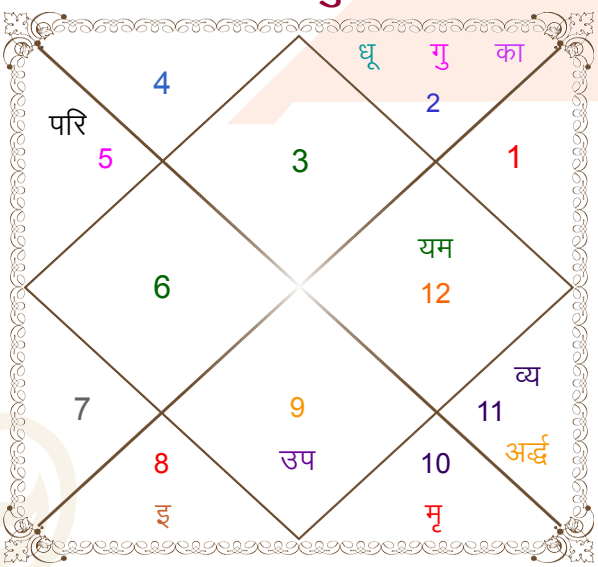

आरूढ़ कुंडली

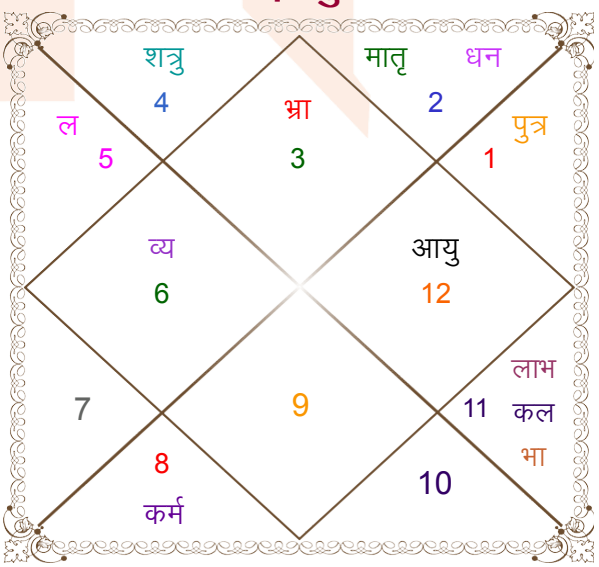

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	एकुण
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगळ	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
एकुण	**1**	**3**	**4**	**4**	**6**	**5**	**3**	**3**	**7**	**4**	**5**	**3**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	एकुण
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
मंगळ	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
एकुण	**2**	**4**	**3**	**4**	**4**	**3**	**4**	**5**	**5**	**2**	**7**	**6**	**49**

मंगळ का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	एकुण
शनि	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
मंगळ	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
बुध	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
एकुण	**1**	**4**	**6**	**3**	**0**	**2**	**5**	**3**	**4**	**7**	**1**	**3**	**39**

बुद्ध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	एकुण
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
मंगळ	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
एकुण	**4**	**2**	**6**	**4**	**6**	**6**	**3**	**3**	**7**	**3**	**6**	**4**	**54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	एकुण
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगळ	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
एकुण	**5**	**5**	**4**	**6**	**2**	**5**	**5**	**3**	**5**	**8**	**5**	**3**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	एकुण
शनि	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगळ	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
एकुण	**3**	**4**	**4**	**4**	**5**	**3**	**3**	**6**	**4**	**5**	**7**	**4**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	एकुण
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगळ	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
एकुण	**4**	**2**	**4**	**6**	**4**	**3**	**3**	**1**	**2**	**2**	**6**	**2**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	एकुण
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगळ	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
एकुण	**5**	**2**	**4**	**4**	**5**	**7**	**1**	**4**	**5**	**3**	**5**	**4**	**49**

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	2	2	6	2	4	2	4	6	4	3	3	1	39
गुरु	6	2	5	5	3	5	8	5	3	5	5	4	56
मंगळ	3	4	7	1	3	1	4	6	3	0	2	5	39
सूर्य	4	6	5	3	3	7	4	5	3	1	3	4	48
शुक्र	4	5	3	3	6	4	5	7	4	3	4	4	52
बुध	4	6	6	3	3	7	3	6	4	4	2	6	54
चंद्र	4	3	4	5	5	2	7	6	2	4	3	4	49
बिन्दु	27	28	36	22	27	28	35	41	23	20	22	28	337
रेखा	29	28	20	34	29	28	21	15	33	36	34	28	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	0	0	3	1	2	0	1	5	2	1	0	0	15
गुरु	3	0	0	1	0	3	3	1	0	3	0	0	14
मंगळ	0	4	5	0	0	1	2	5	0	0	0	4	21
सूर्य	1	5	2	0	0	6	1	2	0	0	0	1	18
शुक्र	0	2	0	0	2	1	2	4	0	0	1	1	13
बुध	1	2	4	0	0	3	1	3	1	0	0	3	18
चंद्र	2	1	1	1	3	0	4	2	0	2	0	0	16
रेखा	7	14	15	3	7	14	14	22	3	6	1	9	115

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	0	0	3	1	2	0	1	5	2	1	0	0	15
गुरु	2	0	0	1	0	3	3	1	0	3	0	0	13
मंगळ	0	2	4	0	0	1	2	5	0	0	0	4	18
सूर्य	1	4	0	0	0	6	1	1	0	0	0	1	14
शुक्र	0	0	0	0	2	1	0	4	0	0	1	1	9
बुध	1	1	1	0	0	3	1	2	1	0	0	2	12
चंद्र	0	1	1	1	3	0	3	0	0	2	0	0	11
रेखा	4	8	9	3	7	14	11	18	3	6	1	8	92

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	104	83	159	96	77	80	118
ग्रह पिंड	48	69	8	29	105	18	47
शोध्य पिंड	152	152	167	125	182	98	165

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

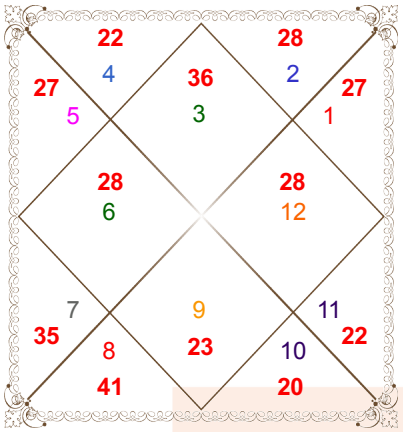

सूर्य का अष्टकवर्ग

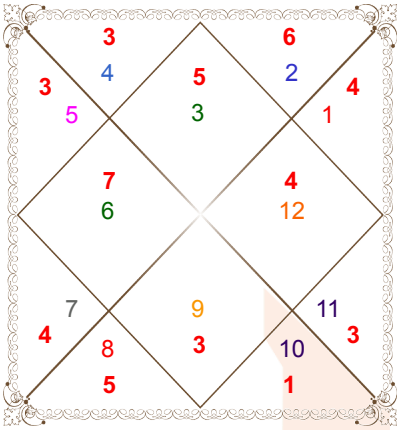

चंद्र का अष्टकवर्ग

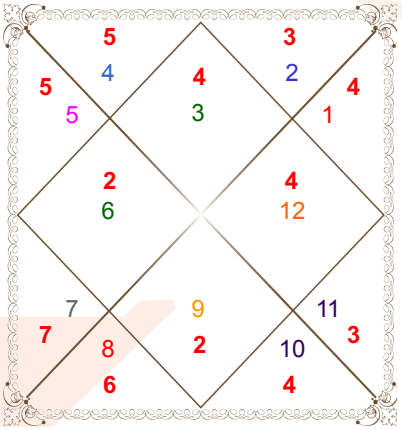

मंगळ का अष्टकवर्ग

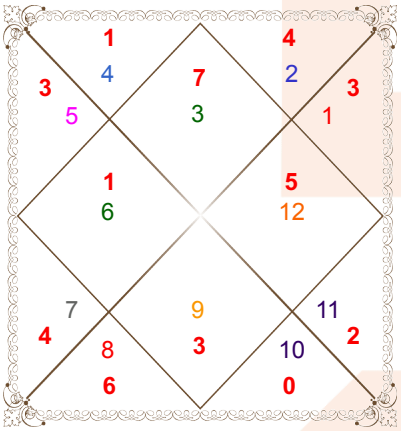

बुद्ध का अष्टकवर्ग

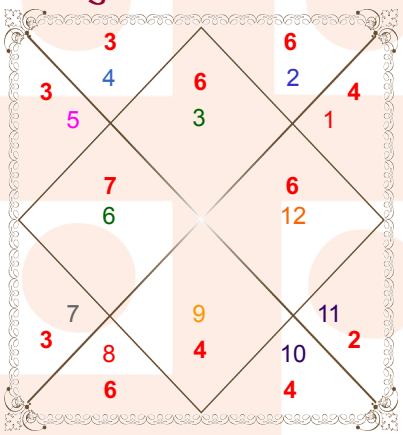

गुरू का अष्टकवर्ग

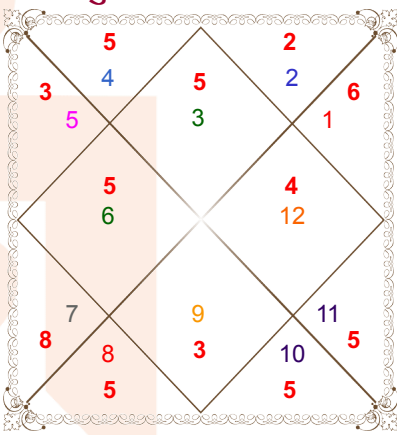

शुक्र का अष्टकवर्ग

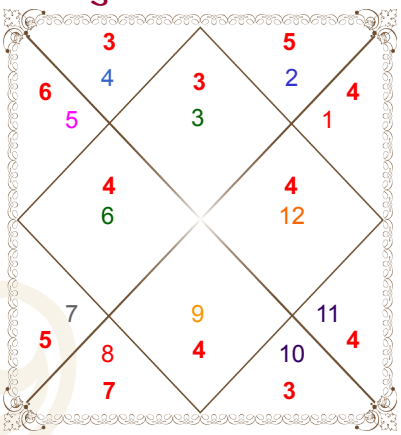

शनि का अष्टकवर्ग

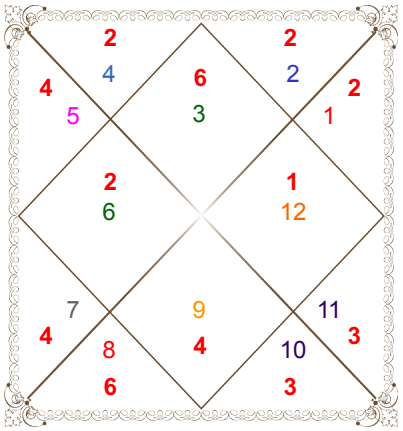

लग्न का अष्टकवर्ग

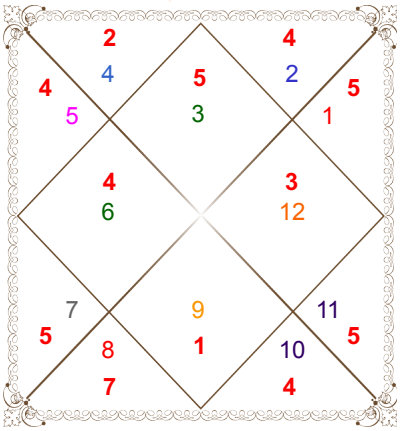

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : शुक्र 5 वर्ष 7 महिना 0 दिवस

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
17/01/1950		19/08/1955		18/08/1961		19/08/1971		19/08/1978	
19/08/1955		18/08/1961		19/08/1971		19/08/1978		18/08/1996	
	00/00/0000	सूर्य	07/12/1955	चंद्र	19/06/1962	मंगळ	15/01/1972	राहु	01/05/1981
	00/00/0000	चंद्र	06/06/1956	मंगळ	18/01/1963	राहु	02/02/1973	गुरु	25/09/1983
	00/00/0000	मंगळ	12/10/1956	राहु	19/07/1964	गुरु	09/01/1974	शनि	31/07/1986
	00/00/0000	राहु	06/09/1957	गुरु	18/11/1965	शनि	17/02/1975	बुध	17/02/1989
	00/00/0000	गुरु	25/06/1958	शनि	19/06/1967	बुध	15/02/1976	केतु	07/03/1990
	17/01/1950	शनि	07/06/1959	बुध	18/11/1968	केतु	13/07/1976	शुक्र	07/03/1993
शनि	19/08/1951	बुध	12/04/1960	केतु	19/06/1969	शुक्र	12/09/1977	सूर्य	30/01/1994
बुध	19/06/1954	केतु	18/08/1960	शुक्र	17/02/1971	सूर्य	18/01/1978	चंद्र	01/08/1995
केतु	19/08/1955	शुक्र	18/08/1961	सूर्य	19/08/1971	चंद्र	19/08/1978	मंगळ	18/08/1996

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
18/08/1996		18/08/2012		19/08/2031		18/08/2048		19/08/2055	
18/08/2012		19/08/2031		18/08/2048		19/08/2055		00/00/0000	
गुरु	06/10/1998	शनि	22/08/2015	बुध	15/01/2034	केतु	14/01/2049	शुक्र	18/12/2058
शनि	19/04/2001	बुध	01/05/2018	केतु	12/01/2035	शुक्र	17/03/2050	सूर्य	19/12/2059
बुध	26/07/2003	केतु	10/06/2019	शुक्र	12/11/2037	सूर्य	22/07/2050	चंद्र	18/08/2061
केतु	01/07/2004	शुक्र	10/08/2022	सूर्य	18/09/2038	चंद्र	20/02/2051	मंगळ	19/10/2062
शुक्र	02/03/2007	सूर्य	23/07/2023	चंद्र	18/02/2040	मंगळ	20/07/2051	राहु	18/10/2065
सूर्य	19/12/2007	चंद्र	20/02/2025	मंगळ	14/02/2041	राहु	06/08/2052	गुरु	18/06/2068
चंद्र	19/04/2009	मंगळ	01/04/2026	राहु	03/09/2043	गुरु	13/07/2053	शनि	17/01/2070
मंगळ	26/03/2010	राहु	05/02/2029	गुरु	09/12/2045	शनि	22/08/2054		00/00/0000
राहु	18/08/2012	गुरु	19/08/2031	शनि	18/08/2048	बुध	19/08/2055		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शुक्र 5 वर्ष 7 मा 12 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
17/01/1950		19/08/1951		19/06/1954		19/08/1955		07/12/1955	
19/08/1951		19/06/1954		19/08/1955		07/12/1955		06/06/1956	
	00/00/0000	बुध	13/01/1952	केतु	14/07/1954	सूर्य	24/08/1955	चंद्र	22/12/1955
	00/00/0000	केतु	13/03/1952	शुक्र	23/09/1954	चंद्र	03/09/1955	मंगळ	01/01/1956
	17/01/1950	शुक्र	01/09/1952	सूर्य	14/10/1954	मंगळ	09/09/1955	राहु	29/01/1956
शुक्र	16/02/1950	सूर्य	23/10/1952	चंद्र	19/11/1954	राहु	25/09/1955	गुरु	22/02/1956
सूर्य	14/04/1950	चंद्र	17/01/1953	मंगळ	13/12/1954	गुरु	10/10/1955	शनि	22/03/1956
चंद्र	20/07/1950	मंगळ	19/03/1953	राहु	15/02/1955	शनि	27/10/1955	बुध	17/04/1956
मंगळ	25/09/1950	राहु	21/08/1953	गुरु	13/04/1955	बुध	12/11/1955	केतु	28/04/1956
राहु	18/03/1951	गुरु	06/01/1954	शनि	20/06/1955	केतु	18/11/1955	शुक्र	28/05/1956
गुरु	19/08/1951	शनि	19/06/1954	बुध	19/08/1955	शुक्र	07/12/1955	सूर्य	06/06/1956

सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
06/06/1956		12/10/1956		06/09/1957		25/06/1958		07/06/1959	
12/10/1956		06/09/1957		25/06/1958		07/06/1959		12/04/1960	
मंगळ	14/06/1956	राहु	30/11/1956	गुरु	15/10/1957	शनि	19/08/1958	बुध	21/07/1959
राहु	03/07/1956	गुरु	13/01/1957	शनि	30/11/1957	बुध	07/10/1958	केतु	08/08/1959
गुरु	20/07/1956	शनि	06/03/1957	बुध	10/01/1958	केतु	27/10/1958	शुक्र	29/09/1959
शनि	09/08/1956	बुध	22/04/1957	केतु	27/01/1958	शुक्र	24/12/1958	सूर्य	14/10/1959
बुध	27/08/1956	केतु	11/05/1957	शुक्र	17/03/1958	सूर्य	10/01/1959	चंद्र	09/11/1959
केतु	04/09/1956	शुक्र	05/07/1957	सूर्य	01/04/1958	चंद्र	08/02/1959	मंगळ	27/11/1959
शुक्र	25/09/1956	सूर्य	21/07/1957	चंद्र	25/04/1958	मंगळ	01/03/1959	राहु	13/01/1960
सूर्य	01/10/1956	चंद्र	18/08/1957	मंगळ	12/05/1958	राहु	22/04/1959	गुरु	23/02/1960
चंद्र	12/10/1956	मंगळ	06/09/1957	राहु	25/06/1958	गुरु	07/06/1959	शनि	12/04/1960

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु	
12/04/1960		18/08/1960		18/08/1961		19/06/1962		18/01/1963	
18/08/1960		18/08/1961		19/06/1962		18/01/1963		19/07/1964	
केतु	20/04/1960	शुक्र	18/10/1960	चंद्र	13/09/1961	मंगळ	01/07/1962	राहु	10/04/1963
शुक्र	11/05/1960	सूर्य	05/11/1960	मंगळ	01/10/1961	राहु	02/08/1962	गुरु	22/06/1963
सूर्य	18/05/1960	चंद्र	06/12/1960	राहु	15/11/1961	गुरु	31/08/1962	शनि	17/09/1963
चंद्र	28/05/1960	मंगळ	27/12/1960	गुरु	26/12/1961	शनि	03/10/1962	बुध	04/12/1963
मंगळ	05/06/1960	राहु	20/02/1961	शनि	12/02/1962	बुध	03/11/1962	केतु	04/01/1964
राहु	24/06/1960	गुरु	10/04/1961	बुध	27/03/1962	केतु	15/11/1962	शुक्र	05/04/1964
गुरु	11/07/1960	शनि	06/06/1961	केतु	14/04/1962	शुक्र	21/12/1962	सूर्य	02/05/1964
शनि	31/07/1960	बुध	28/07/1961	शुक्र	04/06/1962	सूर्य	31/12/1962	चंद्र	17/06/1964
बुध	18/08/1960	केतु	18/08/1961	सूर्य	19/06/1962	चंद्र	18/01/1963	मंगळ	19/07/1964

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
19/07/1964		18/11/1965		19/06/1967		18/11/1968		19/06/1969	
18/11/1965		19/06/1967		18/11/1968		19/06/1969		17/02/1971	
गुरु	22/09/1964	शनि	17/02/1966	बुध	31/08/1967	केतु	30/11/1968	शुक्र	28/09/1969
शनि	08/12/1964	बुध	10/05/1966	केतु	01/10/1967	शुक्र	04/01/1969	सूर्य	29/10/1969
बुध	15/02/1965	केतु	13/06/1966	शुक्र	26/12/1967	सूर्य	15/01/1969	चंद्र	18/12/1969
केतु	15/03/1965	शुक्र	17/09/1966	सूर्य	21/01/1968	चंद्र	02/02/1969	मंगळ	23/01/1970
शुक्र	04/06/1965	सूर्य	16/10/1966	चंद्र	04/03/1968	मंगळ	14/02/1969	राहु	24/04/1970
सूर्य	29/06/1965	चंद्र	04/12/1966	मंगळ	03/04/1968	राहु	18/03/1969	गुरु	14/07/1970
चंद्र	08/08/1965	मंगळ	06/01/1967	राहु	20/06/1968	गुरु	16/04/1969	शनि	19/10/1970
मंगळ	06/09/1965	राहु	03/04/1967	गुरु	28/08/1968	शनि	19/05/1969	बुध	13/01/1971
राहु	18/11/1965	गुरु	19/06/1967	शनि	18/11/1968	बुध	19/06/1969	केतु	17/02/1971

चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि	
17/02/1971		19/08/1971		15/01/1972		02/02/1973		09/01/1974	
19/08/1971		15/01/1972		02/02/1973		09/01/1974		17/02/1975	
सूर्य	26/02/1971	मंगळ	28/08/1971	राहु	13/03/1972	गुरु	19/03/1973	शनि	14/03/1974
चंद्र	14/03/1971	राहु	19/09/1971	गुरु	03/05/1972	शनि	12/05/1973	बुध	10/05/1974
मंगळ	24/03/1971	गुरु	09/10/1971	शनि	03/07/1972	बुध	29/06/1973	केतु	03/06/1974
राहु	21/04/1971	शनि	02/11/1971	बुध	26/08/1972	केतु	19/07/1973	शुक्र	09/08/1974
गुरु	15/05/1971	बुध	23/11/1971	केतु	17/09/1972	शुक्र	14/09/1973	सूर्य	29/08/1974
शनि	13/06/1971	केतु	01/12/1971	शुक्र	20/11/1972	सूर्य	01/10/1973	चंद्र	02/10/1974
बुध	09/07/1971	शुक्र	26/12/1971	सूर्य	09/12/1972	चंद्र	30/10/1973	मंगळ	26/10/1974
केतु	20/07/1971	सूर्य	03/01/1972	चंद्र	10/01/1973	मंगळ	18/11/1973	राहु	25/12/1974
शुक्र	19/08/1971	चंद्र	15/01/1972	मंगळ	02/02/1973	राहु	09/01/1974	गुरु	17/02/1975

मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र	
17/02/1975		15/02/1976		13/07/1976		12/09/1977		18/01/1978	
15/02/1976		13/07/1976		12/09/1977		18/01/1978		19/08/1978	
बुध	10/04/1975	केतु	23/02/1976	शुक्र	22/09/1976	सूर्य	18/09/1977	चंद्र	04/02/1978
केतु	01/05/1975	शुक्र	19/03/1976	सूर्य	13/10/1976	चंद्र	29/09/1977	मंगळ	17/02/1978
शुक्र	30/06/1975	सूर्य	27/03/1976	चंद्र	18/11/1976	मंगळ	06/10/1977	राहु	21/03/1978
सूर्य	18/07/1975	चंद्र	08/04/1976	मंगळ	12/12/1976	राहु	26/10/1977	गुरु	18/04/1978
चंद्र	17/08/1975	मंगळ	17/04/1976	राहु	14/02/1977	गुरु	12/11/1977	शनि	22/05/1978
मंगळ	08/09/1975	राहु	09/05/1976	गुरु	12/04/1977	शनि	02/12/1977	बुध	21/06/1978
राहु	01/11/1975	गुरु	29/05/1976	शनि	19/06/1977	बुध	20/12/1977	केतु	04/07/1978
गुरु	19/12/1975	शनि	22/06/1976	बुध	18/08/1977	केतु	27/12/1977	शुक्र	08/08/1978
शनि	15/02/1976	बुध	13/07/1976	केतु	12/09/1977	शुक्र	18/01/1978	सूर्य	19/08/1978

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
19/08/1978		01/05/1981		25/09/1983		31/07/1986		17/02/1989	
01/05/1981		25/09/1983		31/07/1986		17/02/1989		07/03/1990	
राहु	14/01/1979	गुरु	26/08/1981	शनि	07/03/1984	बुध	10/12/1986	केतु	11/03/1989
गुरु	25/05/1979	शनि	12/01/1982	बुध	02/08/1984	केतु	03/02/1987	शुक्र	14/05/1989
शनि	28/10/1979	बुध	16/05/1982	केतु	02/10/1984	शुक्र	08/07/1987	सूर्य	02/06/1989
बुध	16/03/1980	केतु	06/07/1982	शुक्र	24/03/1985	सूर्य	24/08/1987	चंद्र	04/07/1989
केतु	13/05/1980	शुक्र	29/11/1982	सूर्य	15/05/1985	चंद्र	09/11/1987	मंगळ	27/07/1989
शुक्र	24/10/1980	सूर्य	12/01/1983	चंद्र	10/08/1985	मंगळ	02/01/1988	राहु	22/09/1989
सूर्य	12/12/1980	चंद्र	26/03/1983	मंगळ	10/10/1985	राहु	21/05/1988	गुरु	12/11/1989
चंद्र	04/03/1981	मंगळ	16/05/1983	राहु	15/03/1986	गुरु	22/09/1988	शनि	12/01/1990
मंगळ	01/05/1981	राहु	25/09/1983	गुरु	31/07/1986	शनि	17/02/1989	बुध	07/03/1990

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु	
07/03/1990		07/03/1993		30/01/1994		01/08/1995		18/08/1996	
07/03/1993		30/01/1994		01/08/1995		18/08/1996		06/10/1998	
शुक्र	06/09/1990	सूर्य	24/03/1993	चंद्र	17/03/1994	मंगळ	23/08/1995	गुरु	30/11/1996
सूर्य	31/10/1990	चंद्र	20/04/1993	मंगळ	17/04/1994	राहु	20/10/1995	शनि	02/04/1997
चंद्र	30/01/1991	मंगळ	09/05/1993	राहु	09/07/1994	गुरु	10/12/1995	बुध	22/07/1997
मंगळ	04/04/1991	राहु	27/06/1993	गुरु	20/09/1994	शनि	08/02/1996	केतु	05/09/1997
राहु	15/09/1991	गुरु	10/08/1993	शनि	15/12/1994	बुध	03/04/1996	शुक्र	13/01/1998
गुरु	08/02/1992	शनि	01/10/1993	बुध	03/03/1995	केतु	25/04/1996	सूर्य	21/02/1998
शनि	31/07/1992	बुध	17/11/1993	केतु	04/04/1995	शुक्र	28/06/1996	चंद्र	27/04/1998
बुध	02/01/1993	केतु	06/12/1993	शुक्र	04/07/1995	सूर्य	17/07/1996	मंगळ	12/06/1998
केतु	07/03/1993	शुक्र	30/01/1994	सूर्य	01/08/1995	चंद्र	18/08/1996	राहु	06/10/1998

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
06/10/1998		19/04/2001		26/07/2003		01/07/2004		02/03/2007	
19/04/2001		26/07/2003		01/07/2004		02/03/2007		19/12/2007	
शनि	02/03/1999	बुध	14/08/2001	केतु	15/08/2003	शुक्र	10/12/2004	सूर्य	16/03/2007
बुध	11/07/1999	केतु	01/10/2001	शुक्र	10/10/2003	सूर्य	28/01/2005	चंद्र	09/04/2007
केतु	03/09/1999	शुक्र	16/02/2002	सूर्य	27/10/2003	चंद्र	19/04/2005	मंगळ	27/04/2007
शुक्र	04/02/2000	सूर्य	30/03/2002	चंद्र	25/11/2003	मंगळ	15/06/2005	राहु	09/06/2007
सूर्य	21/03/2000	चंद्र	07/06/2002	मंगळ	15/12/2003	राहु	08/11/2005	गुरु	18/07/2007
चंद्र	07/06/2000	मंगळ	25/07/2002	राहु	04/02/2004	गुरु	18/03/2006	शनि	03/09/2007
मंगळ	31/07/2000	राहु	26/11/2002	गुरु	20/03/2004	शनि	19/08/2006	बुध	14/10/2007
राहु	16/12/2000	गुरु	17/03/2003	शनि	13/05/2004	बुध	04/01/2007	केतु	31/10/2007
गुरु	19/04/2001	शनि	26/07/2003	बुध	01/07/2004	केतु	02/03/2007	शुक्र	19/12/2007

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
19/12/2007		19/04/2009		26/03/2010		18/08/2012		22/08/2015	
19/04/2009		26/03/2010		18/08/2012		22/08/2015		01/05/2018	
चंद्र	28/01/2008	मंगळ	09/05/2009	राहु	04/08/2010	शनि	08/02/2013	बुध	08/01/2016
मंगळ	26/02/2008	राहु	29/06/2009	गुरु	29/11/2010	बुध	14/07/2013	केतु	06/03/2016
राहु	09/05/2008	गुरु	13/08/2009	शनि	17/04/2011	केतु	16/09/2013	शुक्र	17/08/2016
गुरु	13/07/2008	शनि	06/10/2009	बुध	19/08/2011	शुक्र	18/03/2014	सूर्य	05/10/2016
शनि	28/09/2008	बुध	23/11/2009	केतु	09/10/2011	सूर्य	12/05/2014	चंद्र	26/12/2016
बुध	06/12/2008	केतु	13/12/2009	शुक्र	03/03/2012	चंद्र	12/08/2014	मंगळ	21/02/2017
केतु	03/01/2009	शुक्र	08/02/2010	सूर्य	16/04/2012	मंगळ	15/10/2014	राहु	18/07/2017
शुक्र	25/03/2009	सूर्य	25/02/2010	चंद्र	28/06/2012	राहु	29/03/2015	गुरु	26/11/2017
सूर्य	19/04/2009	चंद्र	26/03/2010	मंगळ	18/08/2012	गुरु	22/08/2015	शनि	01/05/2018

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगळ	
01/05/2018		10/06/2019		10/08/2022		23/07/2023		20/02/2025	
10/06/2019		10/08/2022		23/07/2023		20/02/2025		01/04/2026	
केतु	25/05/2018	शुक्र	20/12/2019	सूर्य	27/08/2022	चंद्र	09/09/2023	मंगळ	16/03/2025
शुक्र	31/07/2018	सूर्य	16/02/2020	चंद्र	25/09/2022	मंगळ	13/10/2023	राहु	15/05/2025
सूर्य	20/08/2018	चंद्र	22/05/2020	मंगळ	15/10/2022	राहु	07/01/2024	गुरु	08/07/2025
चंद्र	23/09/2018	मंगळ	28/07/2020	राहु	06/12/2022	गुरु	24/03/2024	शनि	10/09/2025
मंगळ	17/10/2018	राहु	18/01/2021	गुरु	21/01/2023	शनि	24/06/2024	बुध	07/11/2025
राहु	17/12/2018	गुरु	21/06/2021	शनि	17/03/2023	बुध	14/09/2024	केतु	30/11/2025
गुरु	09/02/2019	शनि	21/12/2021	बुध	06/05/2023	केतु	18/10/2024	शुक्र	06/02/2026
शनि	14/04/2019	बुध	03/06/2022	केतु	26/05/2023	शुक्र	22/01/2025	सूर्य	26/02/2026
बुध	10/06/2019	केतु	10/08/2022	शुक्र	23/07/2023	सूर्य	20/02/2025	चंद्र	01/04/2026

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
01/04/2026		05/02/2029		19/08/2031		15/01/2034		12/01/2035	
05/02/2029		19/08/2031		15/01/2034		12/01/2035		12/11/2037	
राहु	04/09/2026	गुरु	08/06/2029	बुध	22/12/2031	केतु	05/02/2034	शुक्र	03/07/2035
गुरु	21/01/2027	शनि	02/11/2029	केतु	11/02/2032	शुक्र	06/04/2034	सूर्य	24/08/2035
शनि	04/07/2027	बुध	13/03/2030	शुक्र	07/07/2032	सूर्य	24/04/2034	चंद्र	18/11/2035
बुध	29/11/2027	केतु	06/05/2030	सूर्य	20/08/2032	चंद्र	24/05/2034	मंगळ	18/01/2036
केतु	29/01/2028	शुक्र	07/10/2030	चंद्र	01/11/2032	मंगळ	15/06/2034	राहु	21/06/2036
शुक्र	20/07/2028	सूर्य	22/11/2030	मंगळ	22/12/2032	राहु	08/08/2034	गुरु	06/11/2036
सूर्य	10/09/2028	चंद्र	07/02/2031	राहु	03/05/2033	गुरु	25/09/2034	शनि	19/04/2037
चंद्र	06/12/2028	मंगळ	02/04/2031	गुरु	28/08/2033	शनि	22/11/2034	बुध	12/09/2037
मंगळ	05/02/2029	राहु	19/08/2031	शनि	15/01/2034	बुध	12/01/2035	केतु	12/11/2037

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगळ		बुध - राहु		बुध - गुरु	
12/11/2037		18/09/2038		18/02/2040		14/02/2041		03/09/2043	
18/09/2038		18/02/2040		14/02/2041		03/09/2043		09/12/2045	
सूर्य	27/11/2037	चंद्र	31/10/2038	मंगळ	10/03/2040	राहु	04/07/2041	गुरु	23/12/2043
चंद्र	23/12/2037	मंगळ	30/11/2038	राहु	03/05/2040	गुरु	05/11/2041	शनि	02/05/2044
मंगळ	10/01/2038	राहु	16/02/2039	गुरु	20/06/2040	शनि	01/04/2042	बुध	27/08/2044
राहु	26/02/2038	गुरु	26/04/2039	शनि	17/08/2040	बुध	11/08/2042	केतु	14/10/2044
गुरु	08/04/2038	शनि	17/07/2039	बुध	07/10/2040	केतु	04/10/2042	शुक्र	01/03/2045
शनि	27/05/2038	बुध	28/09/2039	केतु	28/10/2040	शुक्र	09/03/2043	सूर्य	12/04/2045
बुध	10/07/2038	केतु	28/10/2039	शुक्र	28/12/2040	सूर्य	24/04/2043	चंद्र	20/06/2045
केतु	28/07/2038	शुक्र	23/01/2040	सूर्य	15/01/2041	चंद्र	11/07/2043	मंगळ	07/08/2045
शुक्र	18/09/2038	सूर्य	18/02/2040	चंद्र	14/02/2041	मंगळ	03/09/2043	राहु	09/12/2045

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
09/12/2045		18/08/2048		14/01/2049		17/03/2050		22/07/2050	
18/08/2048		14/01/2049		17/03/2050		22/07/2050		20/02/2051	
शनि	14/05/2046	केतु	27/08/2048	शुक्र	26/03/2049	सूर्य	23/03/2050	चंद्र	09/08/2050
बुध	30/09/2046	शुक्र	21/09/2048	सूर्य	17/04/2049	चंद्र	03/04/2050	मंगळ	22/08/2050
केतु	26/11/2046	सूर्य	28/09/2048	चंद्र	22/05/2049	मंगळ	10/04/2050	राहु	22/09/2050
शुक्र	09/05/2047	चंद्र	11/10/2048	मंगळ	16/06/2049	राहु	29/04/2050	गुरु	21/10/2050
सूर्य	27/06/2047	मंगळ	19/10/2048	राहु	19/08/2049	गुरु	16/05/2050	शनि	24/11/2050
चंद्र	17/09/2047	राहु	11/11/2048	गुरु	15/10/2049	शनि	05/06/2050	बुध	24/12/2050
मंगळ	14/11/2047	गुरु	01/12/2048	शनि	21/12/2049	बुध	24/06/2050	केतु	05/01/2051
राहु	09/04/2048	शनि	24/12/2048	बुध	20/02/2050	केतु	01/07/2050	शुक्र	10/02/2051
गुरु	18/08/2048	बुध	14/01/2049	केतु	17/03/2050	शुक्र	22/07/2050	सूर्य	20/02/2051

केतु - मंगळ		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
20/02/2051		20/07/2051		06/08/2052		13/07/2053		22/08/2054	
20/07/2051		06/08/2052		13/07/2053		22/08/2054		19/08/2055	
मंगळ	01/03/2051	राहु	15/09/2051	गुरु	21/09/2052	शनि	15/09/2053	बुध	12/10/2054
राहु	23/03/2051	गुरु	05/11/2051	शनि	13/11/2052	बुध	11/11/2053	केतु	02/11/2054
गुरु	12/04/2051	शनि	05/01/2052	बुध	01/01/2053	केतु	05/12/2053	शुक्र	02/01/2055
शनि	06/05/2051	बुध	28/02/2052	केतु	21/01/2053	शुक्र	10/02/2054	सूर्य	20/01/2055
बुध	27/05/2051	केतु	22/03/2052	शुक्र	18/03/2053	सूर्य	03/03/2054	चंद्र	19/02/2055
केतु	05/06/2051	शुक्र	25/05/2052	सूर्य	05/04/2053	चंद्र	05/04/2054	मंगळ	12/03/2055
शुक्र	30/06/2051	सूर्य	13/06/2052	चंद्र	03/05/2053	मंगळ	29/04/2054	राहु	05/05/2055
सूर्य	07/07/2051	चंद्र	15/07/2052	मंगळ	23/05/2053	राहु	29/06/2054	गुरु	23/06/2055
चंद्र	20/07/2051	मंगळ	06/08/2052	राहु	13/07/2053	गुरु	22/08/2054	शनि	19/08/2055

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - राहु - राहु	
01/04/2026 05:17	
04/09/2026 08:45	
राहु	24/04/2026 15:24
गुरु	15/05/2026 11:04
शनि	09/06/2026 04:25
बुध	01/07/2026 07:18
केतु	10/07/2026 09:54
शुक्र	05/08/2026 10:29
सूर्य	13/08/2026 05:51
चंद्र	26/08/2026 06:08
मंगळ	04/09/2026 08:45

शनि - राहु - गुरु	
04/09/2026 08:45	
21/01/2027 03:49	
गुरु	22/09/2026 20:53
शनि	14/10/2026 20:18
बुध	03/11/2026 12:13
केतु	11/11/2026 14:31
शुक्र	04/12/2026 17:42
सूर्य	11/12/2026 16:15
चंद्र	23/12/2026 05:51
मंगळ	31/12/2026 08:10
राहु	21/01/2027 03:49

शनि - राहु - शनि	
21/01/2027 03:49	
04/07/2027 23:29	
शनि	16/02/2027 06:08
बुध	11/03/2027 14:31
केतु	21/03/2027 05:16
शुक्र	17/04/2027 16:33
सूर्य	25/04/2027 22:20
चंद्र	09/05/2027 15:58
मंगळ	19/05/2027 06:43
राहु	13/06/2027 00:04
गुरु	04/07/2027 23:29

शनि - राहु - बुध	
04/07/2027 23:29	
29/11/2027 10:45	
बुध	25/07/2027 20:53
केतु	03/08/2027 11:20
शुक्र	28/08/2027 01:13
सूर्य	04/09/2027 10:11
चंद्र	16/09/2027 17:07
मंगळ	25/09/2027 07:34
राहु	17/10/2027 10:28
गुरु	06/11/2027 02:22
शनि	29/11/2027 10:45

शनि - राहु - केतु	
29/11/2027 10:45	
29/01/2028 04:06	
केतु	02/12/2027 23:46
शुक्र	13/12/2027 02:39
सूर्य	16/12/2027 03:31
चंद्र	21/12/2027 04:58
मंगळ	24/12/2027 17:59
राहु	02/01/2028 20:35
गुरु	10/01/2028 22:54
शनि	20/01/2028 13:39
बुध	29/01/2028 04:06

शनि - राहु - शुक्र	
29/01/2028 04:06	
20/07/2028 15:57	
शुक्र	27/02/2028 02:05
सूर्य	06/03/2028 18:16
चंद्र	21/03/2028 05:15
मंगळ	31/03/2028 08:09
राहु	26/04/2028 08:43
गुरु	19/05/2028 11:54
शनि	15/06/2028 23:11
बुध	10/07/2028 13:04
केतु	20/07/2028 15:57

शनि - राहु - सूर्य	
20/07/2028 15:57	
10/09/2028 17:06	
सूर्य	23/07/2028 06:25
चंद्र	27/07/2028 14:30
मंगळ	30/07/2028 15:22
राहु	07/08/2028 10:45
गुरु	14/08/2028 09:18
शनि	22/08/2028 15:05
बुध	30/08/2028 00:03
केतु	02/09/2028 00:55
शुक्र	10/09/2028 17:06

शनि - राहु - चंद्र	
10/09/2028 17:06	
06/12/2028 11:02	
चंद्र	17/09/2028 22:36
मंगळ	23/09/2028 00:03
राहु	06/10/2028 00:20
गुरु	17/10/2028 13:55
शनि	31/10/2028 07:34
बुध	12/11/2028 14:30
केतु	17/11/2028 15:57
शुक्र	02/12/2028 02:56
सूर्य	06/12/2028 11:02

शनि - राहु - मंगळ	
06/12/2028 11:02	
05/02/2029 04:23	
मंगळ	10/12/2028 00:03
राहु	19/12/2028 02:39
गुरु	27/12/2028 04:57
शनि	05/01/2029 19:42
बुध	14/01/2029 10:10
केतु	17/01/2029 23:10
शुक्र	28/01/2029 02:04
सूर्य	31/01/2029 02:56
चंद्र	05/02/2029 04:23

शनि - गुरु - गुरु	
05/02/2029 04:23	
08/06/2029 13:20	
गुरु	21/02/2029 15:10
शनि	13/03/2029 03:59
बुध	30/03/2029 15:28
केतु	06/04/2029 20:11
शुक्र	27/04/2029 09:41
सूर्य	03/05/2029 13:43
चंद्र	13/05/2029 20:28
मंगळ	21/05/2029 01:12
राहु	08/06/2029 13:20

शनि - गुरु - शनि	
08/06/2029 13:20	
02/11/2029 01:29	
शनि	01/07/2029 18:04
बुध	22/07/2029 12:11
केतु	31/07/2029 01:17
शुक्र	24/08/2029 11:19
सूर्य	31/08/2029 19:07
चंद्र	13/09/2029 00:08
मंगळ	21/09/2029 13:14
राहु	13/10/2029 12:40
गुरु	02/11/2029 01:29

शनि - गुरु - बुध	
02/11/2029 01:29	
13/03/2030 03:30	
बुध	20/11/2029 15:10
केतु	28/11/2029 06:41
शुक्र	20/12/2029 03:01
सूर्य	26/12/2029 16:19
चंद्र	06/01/2030 14:29
मंगळ	14/01/2030 06:00
राहु	02/02/2030 21:55
गुरु	20/02/2030 09:23
शनि	13/03/2030 03:30

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - गुरु - केतु	
13/03/2030 03:30	
06/05/2030 02:55	
केतु	16/03/2030 07:04
शुक्र	25/03/2030 06:58
सूर्य	27/03/2030 23:44
चंद्र	01/04/2030 11:41
मंगळ	04/04/2030 15:15
राहु	12/04/2030 17:34
गुरु	19/04/2030 22:18
शनि	28/04/2030 11:24
बुध	06/05/2030 02:55

शनि - गुरु - शुक्र	
06/05/2030 02:55	
07/10/2030 08:07	
शुक्र	31/05/2030 19:47
सूर्य	08/06/2030 12:51
चंद्र	21/06/2030 09:17
मंगळ	30/06/2030 09:11
राहु	23/07/2030 12:22
गुरु	13/08/2030 01:51
शनि	06/09/2030 11:53
बुध	28/09/2030 08:13
केतु	07/10/2030 08:07

शनि - गुरु - सूर्य	
07/10/2030 08:07	
22/11/2030 14:29	
सूर्य	09/10/2030 15:38
चंद्र	13/10/2030 12:10
मंगळ	16/10/2030 04:56
राहु	23/10/2030 03:29
गुरु	29/10/2030 07:32
शनि	05/11/2030 15:21
बुध	12/11/2030 04:39
केतु	14/11/2030 21:25
शुक्र	22/11/2030 14:29

शनि - गुरु - चंद्र	
22/11/2030 14:29	
07/02/2031 17:05	
चंद्र	29/11/2030 00:42
मंगळ	03/12/2030 12:39
राहु	15/12/2030 02:14
गुरु	25/12/2030 08:59
शनि	06/01/2031 14:00
बुध	17/01/2031 12:10
केतु	22/01/2031 00:07
शुक्र	03/02/2031 20:33
सूर्य	07/02/2031 17:05

शनि - गुरु - मंगळ	
07/02/2031 17:05	
02/04/2031 16:30	
मंगळ	10/02/2031 20:39
राहु	18/02/2031 22:57
गुरु	26/02/2031 03:41
शनि	06/03/2031 16:47
बुध	14/03/2031 08:18
केतु	17/03/2031 11:52
शुक्र	26/03/2031 11:47
सूर्य	29/03/2031 04:33
चंद्र	02/04/2031 16:30

शनि - गुरु - राहु	
02/04/2031 16:30	
19/08/2031 11:35	
राहु	23/04/2031 12:10
गुरु	12/05/2031 00:18
शनि	02/06/2031 23:44
बुध	22/06/2031 15:38
केतु	30/06/2031 17:56
शुक्र	23/07/2031 21:07
सूर्य	30/07/2031 19:41
चंद्र	11/08/2031 09:16
मंगळ	19/08/2031 11:35

बुध - बुध - बुध	
19/08/2031 11:35	
22/12/2031 02:22	
बुध	06/09/2031 03:16
केतु	13/09/2031 09:44
शुक्र	04/10/2031 04:12
सूर्य	10/10/2031 09:44
चंद्र	20/10/2031 18:58
मंगळ	28/10/2031 01:26
राहु	15/11/2031 18:03
गुरु	02/12/2031 08:50
शनि	22/12/2031 02:22

बुध - बुध - केतु	
22/12/2031 02:22	
11/02/2032 09:52	
केतु	25/12/2031 02:12
शुक्र	02/01/2032 15:27
सूर्य	05/01/2032 05:02
चंद्र	09/01/2032 11:39
मंगळ	12/01/2032 11:30
राहु	20/01/2032 04:13
गुरु	27/01/2032 00:25
शनि	04/02/2032 03:24
बुध	11/02/2032 09:52

बुध - बुध - शुक्र	
11/02/2032 09:52	
07/07/2032 00:27	
शुक्र	06/03/2032 20:18
सूर्य	14/03/2032 04:14
चंद्र	26/03/2032 09:26
मंगळ	03/04/2032 22:41
राहु	25/04/2032 22:29
गुरु	15/05/2032 11:37
शनि	07/06/2032 16:44
बुध	28/06/2032 11:12
केतु	07/07/2032 00:27

बुध - बुध - सूर्य	
07/07/2032 00:27	
20/08/2032 00:01	
सूर्य	09/07/2032 05:13
चंद्र	12/07/2032 21:11
मंगळ	15/07/2032 10:46
राहु	22/07/2032 01:06
गुरु	27/07/2032 21:50
शनि	03/08/2032 20:58
बुध	10/08/2032 02:31
केतु	12/08/2032 16:05
शुक्र	20/08/2032 00:01

बुध - बुध - चंद्र	
20/08/2032 00:01	
01/11/2032 07:18	
चंद्र	26/08/2032 02:37
मंगळ	30/08/2032 09:15
राहु	10/09/2032 09:08
गुरु	20/09/2032 03:43
शनि	01/10/2032 18:16
बुध	12/10/2032 03:30
केतु	16/10/2032 10:07
शुक्र	28/10/2032 15:20
सूर्य	01/11/2032 07:18

बुध - बुध - मंगळ	
01/11/2032 07:18	
22/12/2032 14:48	
मंगळ	04/11/2032 07:08
राहु	11/11/2032 23:52
गुरु	18/11/2032 20:04
शनि	26/11/2032 23:03
बुध	04/12/2032 05:31
केतु	07/12/2032 05:21
शुक्र	15/12/2032 18:36
सूर्य	18/12/2032 08:11
चंद्र	22/12/2032 14:48

योगिनी दशा

भोग्य दशा वेल : सिद्धा 1 वर्ष 11 महिना 13 दिवस

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगळा 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
17/01/1950	**01/01/1952**	**01/01/1960**	**31/12/1960**	**01/01/1963**
01/01/1952	**01/01/1960**	**31/12/1960**	**01/01/1963**	**01/01/1966**
00/00/0000	संक 11/10/1953	मंग 11/01/1960	पिंग 10/02/1961	धान्य 02/04/1963
00/00/0000	मंग 01/01/1954	पिंग 01/02/1960	धान्य 12/04/1961	भ्राम 02/08/1963
00/00/0000	पिंग 12/06/1954	धान्य 02/03/1960	भ्राम 02/07/1961	भद्रि 01/01/1964
00/00/0000	धान्य 10/02/1955	भ्राम 12/04/1960	भद्रि 11/10/1961	उल्क 02/07/1964
00/00/0000	भ्राम 01/01/1956	भद्रि 01/06/1960	उल्क 10/02/1962	सिद्ध 31/01/1965
17/01/1950	भद्रि 10/02/1957	उल्क 01/08/1960	सिद्ध 02/07/1962	संक 01/10/1965
भद्रि 01/11/1950	उल्क 12/06/1958	सिद्ध 11/10/1960	संक 12/12/1962	मंग 01/11/1965
उल्क 01/01/1952	सिद्ध 01/01/1960	संक 31/12/1960	मंग 01/01/1963	पिंग 01/01/1966

भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
01/01/1966	**01/01/1970**	**01/01/1975**	**31/12/1980**	**01/01/1988**
01/01/1970	**01/01/1975**	**31/12/1980**	**01/01/1988**	**01/01/1996**
भ्राम 12/06/1966	भद्रि 11/09/1970	उल्क 01/01/1976	सिद्ध 13/05/1982	संक 11/10/1989
भद्रि 01/01/1967	उल्क 13/07/1971	सिद्ध 02/03/1977	संक 02/12/1983	मंग 01/01/1990
उल्क 01/09/1967	सिद्ध 02/07/1972	संक 02/07/1978	मंग 11/02/1984	पिंग 12/06/1990
सिद्ध 11/06/1968	संक 12/08/1973	मंग 01/09/1978	पिंग 02/07/1984	धान्य 10/02/1991
संक 02/05/1969	मंग 01/10/1973	पिंग 01/01/1979	धान्य 31/01/1985	भ्राम 01/01/1992
मंग 12/06/1969	पिंग 11/01/1974	धान्य 03/07/1979	भ्राम 11/11/1985	भद्रि 10/02/1993
पिंग 01/09/1969	धान्य 12/06/1974	भ्राम 02/03/1980	भद्रि 01/11/1986	उल्क 12/06/1994
धान्य 01/01/1970	भ्राम 01/01/1975	भद्रि 31/12/1980	उल्क 01/01/1988	सिद्ध 01/01/1996

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	:	चन्द्र	पिंगला	:	सूर्य	धान्या	:	गुरु	भ्रामरी	:	मंगल
भद्रिका	:	बुध	उल्का	:	शनि	सिद्धा	:	शुक्र	संकटा	:	राहु/केतु

वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते.
योगिनी दशा पूर्ण 36 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
01/01/1996		31/12/1996		01/01/1999		01/01/2002		01/01/2006	
31/12/1996		01/01/1999		01/01/2002		01/01/2006		01/01/2011	
मंग	11/01/1996	पिंग	10/02/1997	धान्य	02/04/1999	भ्राम	12/06/2002	भद्रि	11/09/2006
पिंग	01/02/1996	धान्य	12/04/1997	भ्राम	02/08/1999	भद्रि	01/01/2003	उल्क	13/07/2007
धान्य	02/03/1996	भ्राम	02/07/1997	भद्रि	01/01/2000	उल्क	01/09/2003	सिद्ध	02/07/2008
भ्राम	12/04/1996	भद्रि	11/10/1997	उल्क	02/07/2000	सिद्ध	11/06/2004	संक	12/08/2009
भद्रि	01/06/1996	उल्क	10/02/1998	सिद्ध	31/01/2001	संक	02/05/2005	मंग	01/10/2009
उल्क	01/08/1996	सिद्ध	02/07/1998	संक	01/10/2001	मंग	12/06/2005	पिंग	11/01/2010
सिद्ध	11/10/1996	संक	12/12/1998	मंग	01/11/2001	पिंग	01/09/2005	धान्य	12/06/2010
संक	31/12/1996	मंग	01/01/1999	पिंग	01/01/2002	धान्य	01/01/2006	भ्राम	01/01/2011

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
01/01/2011		31/12/2016		01/01/2024		01/01/2032		31/12/2032	
31/12/2016		01/01/2024		01/01/2032		31/12/2032		01/01/2035	
उल्क	01/01/2012	सिद्ध	13/05/2018	संक	11/10/2025	मंग	11/01/2032	पिंग	10/02/2033
सिद्ध	02/03/2013	संक	02/12/2019	मंग	01/01/2026	पिंग	01/02/2032	धान्य	12/04/2033
संक	02/07/2014	मंग	11/02/2020	पिंग	12/06/2026	धान्य	02/03/2032	भ्राम	02/07/2033
मंग	01/09/2014	पिंग	02/07/2020	धान्य	10/02/2027	भ्राम	12/04/2032	भद्रि	11/10/2033
पिंग	01/01/2015	धान्य	31/01/2021	भ्राम	01/01/2028	भद्रि	01/06/2032	उल्क	10/02/2034
धान्य	03/07/2015	भ्राम	11/11/2021	भद्रि	10/02/2029	उल्क	01/08/2032	सिद्ध	02/07/2034
भ्राम	02/03/2016	भद्रि	01/11/2022	उल्क	12/06/2030	सिद्ध	11/10/2032	संक	12/12/2034
भद्रि	31/12/2016	उल्क	01/01/2024	सिद्ध	01/01/2032	संक	31/12/2032	मंग	01/01/2035

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
01/01/2035		01/01/2038		01/01/2042		01/01/2047		31/12/2052	
01/01/2038		01/01/2042		01/01/2047		31/12/2052		00/00/0000	
धान्य	02/04/2035	भ्राम	12/06/2038	भद्रि	11/09/2042	उल्क	01/01/2048	सिद्ध	13/05/2054
भ्राम	02/08/2035	भद्रि	01/01/2039	उल्क	13/07/2043	सिद्ध	02/03/2049	संक	02/12/2055
भद्रि	01/01/2036	उल्क	01/09/2039	सिद्ध	02/07/2044	संक	02/07/2050	मंग	11/02/2056
उल्क	02/07/2036	सिद्ध	11/06/2040	संक	12/08/2045	मंग	01/09/2050	पिंग	02/07/2056
सिद्ध	31/01/2037	संक	02/05/2041	मंग	01/10/2045	पिंग	01/01/2051	धान्य	31/01/2057
संक	01/10/2037	मंग	12/06/2041	पिंग	11/01/2046	धान्य	03/07/2051	भ्राम	11/11/2057
मंग	01/11/2037	पिंग	01/09/2041	धान्य	12/06/2046	भ्राम	02/03/2052	भद्रि	17/01/2058
पिंग	01/01/2038	धान्य	01/01/2042	भ्राम	01/01/2047	भद्रि	31/12/2052		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	8
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 2, 8, 6
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिवस	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सकाली के बाद
दान पदार्थ	हत्ती दाँत, काफुर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	75%	दुर्घटणा पासून सुरक्षा, स्वास्थ्य, सुख
मोती	चंद्र	62%	दम्पति, धन
नीलम	शनि	58%	पराक्रम, दुर्घटणा पासून सुरक्षा, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	41%	दुर्घटना, व्यय, सन्तति कष्ट
पोवले	मंगळ	38%	ग्रह कलेश, हानि, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	34%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
गोमेद	राहु	31%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	9%	दुर्घटना, पराक्रम हानि
पुष्कराज	गुरु	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि

रत्न की शुभता

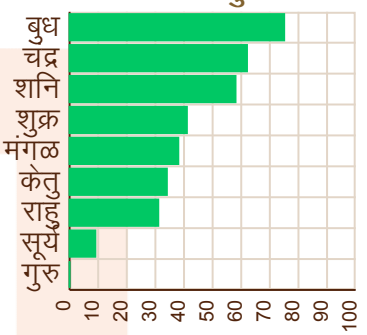

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	19/08/1955	0%	50%	38%	81%	0%	58%	64%	44%	47%
सूर्य	18/08/1961	34%	69%	50%	75%	9%	16%	41%	6%	9%
चंद्र	19/08/1971	22%	75%	38%	81%	0%	41%	58%	6%	9%
मंगळ	19/08/1978	22%	69%	56%	62%	9%	41%	58%	6%	47%
राहु	18/08/1996	0%	50%	12%	75%	0%	52%	64%	53%	9%
गुरु	18/08/2012	22%	69%	50%	62%	22%	16%	58%	31%	34%
शनि	19/08/2031	0%	50%	12%	81%	0%	52%	70%	44%	9%
बुध	18/08/2048	22%	50%	38%	88%	0%	52%	58%	31%	34%
केतु	19/08/2055	0%	50%	50%	75%	0%	52%	41%	6%	55%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मोती एवं नीलम रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

हीरा, मूंगा, लहसुनिया व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त बनाये रखेगा। यह शुभ रत्न पन्ना आपको प्रसिद्ध, यशस्वी और राज्यमान बनायेगा। रत्न प्रभाव से आप प्रसिद्ध और धनी बनेंगे। आपकी स्मरण शक्ति प्रबल होगी। रत्न की अनुकूलता आपको कुल पोषक और श्रेष्ठ व्यक्ति बनाएगी। पन्ना रत्न से आपके वैभव और संपति में बढ़ोतरी होगी। आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती है। पन्ना रत्न आपको आपके शत्रुओं पर सरलता से विजय पाने में सहयोग देगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते है। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्त्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश बुध का मित्र भी है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण कर आप चंद्र शुभता प्राप्त कर सकते है। मोती रत्न आपको शारीरिक बल तथा मानसिक शक्तियों द्वारा धन व कुटुम्ब से सुखी रख सकता है। मोती

रत्न की शुभता से आप धनी, सुखी एवं सम्मानित व्यक्ति बन सकते है। मोती चंद्र द्वितीयेश का रत्न होने के कारण आपको सुन्दर व सुशील जीवन साथी, दांपत्य जीवन में मधुरता देगा। इसके साथ ही इस रत्न को आप दैनिक व्यवसाय में सफलता के लिए भी धारण कर सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नवमेश शनि का रत्न नीलम धारण कर आप अपने भाग्य में वृद्धि कर सकते है। नीलम रत्न आपको माता-पिता का सुख प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आपको भूमि व संपति से लाभ दे सकता है। शनि रत्न नीलम अष्टमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न को धारण कर आप अप्रत्याशित लाभ प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको शत्रुओं पर हावी रख सकता है। यह रत्न आपको भाग्यवान बना सकता है। यह रत्न आपको शारीरिक कष्टों से बचा सकता है। साथ ही यह रत्न आपके शारीरिक बल में भी वृद्धि कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा पहनने पर आपके कार्यो में कठिनाईयां आ सकती है। यह रत्न आपको वाहन सुख, भोग विलास और सौंदर्यप्रसाधन विषयों की प्राप्ति में परेशानियां दे सकता है। हीरा रत्न धन व ऋण सुख की हानि करा सकता है। बनते कार्यो में बाधाएं आ सकती है। आप व्यर्थ में घूमने फिरने और वादि-ववाद के आदी हो सकते है। यह रत्न आपको वाहनों से शारीरिक कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से विपरीत लिंग विषयों के कारण आपको मान-हानि का सामना करना पड़ सकता है। गुप्त संबंध भी रत्न प्रभाव से बन सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। द्वादशेश शुक्र का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। हीरा रत्न पहनने पर आपको माता, संतान, विद्या एवं जीवन साथी के आय क्षेत्र बाधित हो सकते है। इसके साथ ही यह रत्न आपको भूमि-भवन का अल्प सुख देगा। शुक्र विवाह और वैवाहिक जीवन का कारक होने के कारण ग्रहस्थ सुख में लगाव एवं प्रेम भाव में कमी कर सकता है। सुःख सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय हो सकते है। आर्थिक स्थिति भी इस कारण प्रभावित हो सकती है। हीरा रत्न आपको विवाहेत्तर अथवा विवाह पूर्व अन्य संबंध भी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको समाज में यथायोग्य सम्मान प्राप्त न हो पाए।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपका भूमि-भवन का सुख बाधित होगा। इसके प्रभाव से मंगलिक योग की अशुभता बढ़ सकती है। यह रत्न आपके संतान सुख, घर-परिवार के सुख में आंशिक कमी करेगा। माता से संबन्ध कष्टकारी हो सकते है। इस भाव से मंगल सप्तम, दशम एवं एकादश भाव को देख रहे है। अतः मूंगा रत्न प्रभाव से आपको पैतृक सम्पत्ति खोने का भय भी सता सकता है। अपने परिवार से आपको अलग रहना पड सकता है। शिक्षा प्राप्ति में कुछ व्यवधान आ सकते है। साथ ही रत्न धारण से आपके प्रतिद्वंदी अधिक प्रबल हो सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है। छठे भाव का स्वामित्व होने के कारण मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए कुछ कष्टप्रद हो सकता है। मूंगा रत्न पहनना आपको नेत्रों से संबंधित रोग शीघ्र दे सकता है। आप कम मिलनसार हो सकते है। लड़ाई-झगड़ों से बचने का प्रयास करेंगे। आपत्ति आने पर आप अत्यधिक साहस भाव से काम लेंगे। जिसके कारण चोट आदि की स्थिति बन सकती है। यह रत्न आपको क्रोधी, सख्त बोलने वाले, रक्त विकारी एवं हठी बना सकता हैं. मूंगा रत्न आपको

शत्रुओं द्वारा हानि दे सकता है। अप्रयाशित घटनाओं के कारण आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बन सकती है। आय क्षेत्रों में चोरी आदि का भय हो सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु लहसुनिया रत्न धारण करने से आप सत्यभाव से विमुख हो सकते है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर हो सकते है। कार्यो में आपके द्वारा लापरवाही हो सकती है। यह रत्न आपके जीवन के अनेक प्रकार के दुःखों का कारण बन सकता है। दूसरों की आलोचना में आप आनंन्द का अनुभव करेंगे। मित्रों के द्वारा आपको कई प्रकार के कष्ट मिल सकते है। आपको आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। आपके अंदर उत्साह की कमी हो सकती है। पैतृक धन का विनाश हो सकता है। लहसुनिया रत्न से धनार्जन के लिए आपको देशि-विदेश भटकना पड सकता है। आर्थिक विपन्नता आपको परेशान कर सकती है।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने पर आजीविका क्षेत्र में अत्यंत अभिमानी, कुसंगति में रहने वाले, व्यर्थ विवादी एवं धन व्ययी हो सकते है। यह रत्न आपको मन संताप दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आप लोक निन्दित, परधन-लोभी, चिन्तातुर तथा क्रूर हो सकते है। आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है। गोमेद रत्न पहनने पर आपके द्वारा अनियमित व्यय हो सकते है। बुद्धि का सहयोग न मिलना, पर्यटनशील, पितृ-सुखहीन एवं अनियमित काम करने वाले व्यक्ति भी यह रत्न आपको बना सकता है। गोमेद रत्न दण्डाधिकारी के द्वारा आपको कष्ट दे सकता है। शत्रुओं के कारण संकटों का सामना आपको करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके संतान सुख में कमी कर सकता है।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता

है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते है। ह्रदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते है। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। तृतीयेश सूर्य का माणिक्य रत्न आपको अपने सभी शुभ फल देने में समर्थ नहीं है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आप दुःसाहसी होकर अपनी शारीरिक हानि करा सकते है। इस रत्न प्रभाव से आपकी परिश्रम क्षमता का ह्रास हो सकता है। आपकी ओजस्विता में कमी हो सकती है। माणिक्य रत्न आपको क्रोधी और कठोर बना सकता है। आपका स्वभाव ही मित्रवर्ग से आपके संबंधों में कड़वाहट का कारण बन सकता है। भाई-बहनों का सुख-सहयोग कम ही मिल पाएगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपको प्रचार-प्रसार क्षेत्रों में बाधाएं दे सकता है। आपको यात्राओं में सुख-सुविधा की कमी का अनुभव हो सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। सप्तमेश गुरु का रत्न होने के कारण पुखराज रत्न धारण से आपको सभी शुभ फल नहीं मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको जांघों से संबंधित रोग दे सकता है। यह रत्न धारण करने पर आपकी पदोन्नति विलम्बित हो सकते है। कार्यक्षेत्र में आपके उत्तरदायित्व बढ़ सकते है। व्यवसायिक क्षेत्र में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। विदेशी संपर्को से आपको यथायोग्य लाभ प्राप्त नहीं हो पाएगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन में वैमनस्य का भाव ला सकता है। जीवनसाथी,

साझेदारी और व्यापार क्षेत्र की शुभता बाधित हो सकती है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपको मूत्राशय रोग एवं गुप्त रोगों के संपर्क में आना पड सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(18/08/2012 - 19/08/2031)

शनि की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, लहसुनिया, माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(19/08/2031 - 18/08/2048)

बुध की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(18/08/2048 - 19/08/2055)

केतु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - पन्ना

आपका जन्म मिथुन राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी बुध होता है। बुध सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह सूर्य के सबसे अधिक नजदीक है और सूर्य ग्रहों का राजा होता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मिथुन राशि के लग्न वाले जातकों को मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। बुध ग्रह के लिये पन्ना रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी बुध राजकुमार व व्यापार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा व्यापार में आशातीत लाभ व विद्यार्थियों को बुद्धिबल प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को बड़ी बहन, बुआ और मौसी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। बुध ग्रह वाणी एवं बुद्धि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको वाणी दोष या आत्मविश्वास से संबंधित परेशानी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा बुद्धि बल की प्राप्ति होती है जिससे विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है । पन्ना रत्न बुध का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात बुधवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल बुध की होरा में श्रेष्ठ होता है। बुधवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय बुध की होरा का होता है। पन्ना को यदि बुधवार के साथ-साथ बुध के नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

पन्ना को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर हरे रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र - ऊँ बुं बुधाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि बुध से संबंधित पदार्थ जैसे मूंग दाल, पीतल,

सवा मीटर हरे कपड़े का दान करें तो पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन बुध का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और हिजड़ों को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह पन्ना रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक बुधवार को गणेश जी की उपासना करें तथा गणेश जी को मोदक का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मिथुन लग्न वाले जातक यदि पन्ना रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप मे रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यो के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओन पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती हैं। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग मेंकमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कायी में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्न बाधाएं दे सकता हैं। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता हैं। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	12/11/1955-08/02/1958	02/06/1958-07/11/1958	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	08/02/1958-02/06/1958	07/11/1958-02/02/1961	17/09/1961-08/10/1961
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	02/02/1961-17/09/1961	08/10/1961-27/01/1964	----------
चतुर्थस्थान चरण	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
अष्टमस्थान चरण	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थस्थान चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
अष्टमस्थान चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थस्थान चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टमस्थान चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	शत्रु से कष्ट
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	दम्पति
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	व्यावसाय
अष्टमस्थान चरण	अशुभ	धन

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडलीत मंगळ स्थिति चतुर्थ भावात आहे अतः आपण एक मांगळिक पुरूष आहे यांचे प्रभाव पासून भौतिक सुख संसाधन तसेच इतर जायदाद प्राप्ति परिश्रम पासून होणारी. पण शरीरा ची स्थिति स्वस्थ आणि प्रसन्न रहणारे स्वाभावात कधीं–मधीं उग्रता चे प्रसारण होउ सकतात. पण राजनैतिक लाभावर यांचा काही प्रभाव नाय होणार. मंगळ च प्रभावातून तुमचे विवाह काही उशीर होउ सकतात. तसेच विवाह ची गोष्ठी मधे काही अडचणे होउ सकतात, पण आखेर वेळी–सफळता मिळेल. तुमची बायको चा शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी. मंगळ ची स्थिति चतुर्थ भाव मधे आहे या मुळे सांसारिक सुख साधन परिश्रम पासून प्राप्त होणारे. सप्तम भाव वर दृष्टि होण्या मुळे स्वभावात ओजस्विता रहणार पण स्वास्थ्य सामान्य रहणार तसेच दांपत्य जीवन सुखी आणि समर्थ रहणार, दहावे भावात मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे परिश्रम आणि पराक्रम पासून उच्च पद आणि सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करणारे अखारवे भावात दृष्टि होण्या मुळे तुमचे फायदे चा साधन सामान्य वृद्धि करणार. कधीं–मधीं कमी पण होऊ सकतात पण काही विशेष कुप्रभाव नाय होणार आणि सामान्य जीवन सुखी व्यतीत होणार. अतः मंगळ चा शुभ फळ जास्ती कराय साठी आपण कोणी मांगळिक कन्या पासून विवाह करावे, ज्या मुळे मांगळिक दोष भंग होतात या साठी कन्या ची कुंडली मधे मांगळिक भाव पहिला, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम आणि द्वादश भावात शनि किंवा राहु ची स्थिति होणार पाहिजे मंगळ भंग होण्या नंतर आपण सर्व सफळता प्राप्त करणारे आणि सांसारिक सुख शांति होणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंकविज्ञान फलित

तुमचा जन्म दिनांक 17 आहे. एक आणि सात अंक योग पासून 8 तुमचा मूलांक आहे, मूलांक आठ चा स्वामी शनि आहे अंक एक चा स्वामी सूर्य आणि अंक सहा चा स्वामी शुक्र आहे. मूलांक स्वामी शनि पासून उन्नति हळू–हळू होणारी तुमचे जीवन मधे संघर्ष जास्ती होणार आणि प्रत्येक कार्य शुरु केल्या नंतर अडचणे येणारी ज्या पासून आपण परिश्रम आणि धैर्य बरोबर कार्य सफळ करणारे. निराशा आणि आळस दोन अवगुण तुमचे प्रगति अवरोधक होउ सकतात. अतः कोण पण कार्य असफळ झाल्या नंतर परत शुरु करुन सफळ होणारे. आलस्य पासून सावध रहायला पाहिजे. अंक एक स्वामी सूर्य आणि सात स्वामी नेपच्यून प्रभाव पासून कल्पना शक्ति विचार शक्ति चांगली रहणारी दुसरे लोकांचे निरीक्षण शक्ति तुमचा मधे चांगली होणारी. आत्म ज्ञान पण होणार सूर्य प्रभाव पासून तुमचा नाव स्वतः प्रसिद्धी प्राप्त करणार. समाज मधे अनेक क्षेत्रात यश आणि लाभ प्राप्त होणार. उच्च, वर्ण मधे आपण लोक प्रिय होणारे इच्छा शक्ति दृढ़ रहणारी आणि थोड़े हठीपण होणारे या मुळे कधीं–मधीं घाटे होउ सकतो. स्वतः चे हठपणा वर नियंत्रण ठेवाय ला पाहिजे, सूर्य, केतु, शनि ग्रह प्रभाव पासून जीवन मधे सफळ माणूष होणारे आणि ख्याति पण चांगली रहणारी आणि स्मारक होणारे.

भाग्यांक 6 चा स्वामी शुक्र प्रभावातून तुमचा भाग्योदय चौंसठ कळा मधे होणार. शुक्र कळा चा दाता आहे अतः आपल्या मधे ललित कळा चे काही कळा ची वृत्ति होणारी आपण कळा चे क्षेत्र मधे जीवन ठेवणारे. कलात्मक वस्तु तुम्हाला लाभ देणारी, आपण विपरीत योनी पासून आकर्षण चा कारण तन,मन,धन, खर्च आणि सौंदर्य मधे आर्कषण तुमची कमजोरी होणारी. आपण कार्य आणि निवास स्थान ची आकर्षक ठेवाय साठी नेहमी धन खर्च करणारे असे स्थाना वर रहणारे जो सजावट युक्त होणारे. आपण वस्त्र आभूषण चे शौकीन रहणारे आणि धन ची स्थित सामान्य रहणारी आपण समोरांचे व्यक्ति ला नेहमी धनी समझणारे, कोण पण कळा चे क्षेत्रातीळ आपण रोजगार ठेवणारे तसेच उन्नति निश्चय होणारी.

आपळा मूळांक 8 आहे तसेच भाग्यांक 6 आहे, मूळांक 8 चा स्वामी शनि आणि भाग्यांक 6 चा स्वामी शुक्र आहे यांचे शत्रु चा सम्वन्ध आहे या मुळे कधीं–मधीं परिवर्तन होणार शनि हळू–हळू सफळते देणार आणि शुक्र कळा चा दाता आहे दोनी चा संयुक्त प्रभाव पासून तुम्हाला रोजगार व्यापार मधे कळा आणि परिश्रम पासून मदद मिळणारी जीवनां मधे शुरुआती वेळ आर्थिक कमी ची होणारी पण युवा आयुष्य ला फायदे होणार. तुमचे भाग्या चा निर्माण कळा आणि परिश्रम पासून होणार, आणि अनेक क्षेत्रातीळ सफळता मिळेल ज्या मधे शुरुआती वेळ कार्या ला अवरोध येणार पण आपण तन, मन, धन, लाउन सफळ होणारे पणपूर्ण सफळता उसीर मिळणार जीवनांचे मध्य भागातीळ उच्च कोटी ची सफळता मिळेल आणि आखेर आयुष्य पर्यन्त स्थिर रहणारी समाजा चा क्षेत्रा मधे कर्मठ आणि संघर्ष शील माणूष सारख्या आपळी ख्याती स्मारक होणारी. तुमचा भाग्योदय– 24 वर्ष ची आयुष्य वर शुरु होउन 33 वर्ष ची आयुष्य वर उन्नति आणि 42 वर्ष ची आयुष्य वर पूर्ण भाग्योदय होणार. मूळांक 8 ची 1 आणि 4 वर मित्रता आहे, भाग्यांक 6 ची 3 आणि 9 वर अतः आपळे जीवना मधे 1, 3, 4, 6, 8, 9 चा अंक विशेष महत्वपूर्ण अंक आहे तुमचे मूळांक आणि भाग्यांक शत्रु आहे या मुळे काही कमी सफळता

मिकेळ, तुमचे जीवनां ची घटणे असे अंका ची तारीख, मास, ईस्वी, सन्, आणि वर्ष–मूळांक भाग्यांक सह दिवस स्थापित असतो तर असा दिवसी सर्व कार्य शुभ आहे, नवीन कार्य, पत्र लेख मोठे अधिकारयां ची भेंट वगेरे शुभ आहे. आपण गेलेला दिवसा चा अवलोकन करा असे अंका ची तारीख मास, ईस्वी, सन् मधे काही घटणे नेहमी झाळी असेळ. जीवनां चे गेलेला दिवसा चा निरीक्षण करुन लक्षात ठेवा जेह्वा अंक आपळे पूर्ण अनुकूळ आहे असे अंका ची आधार वर आपळे विशेष प्रयोजने ठेवा असा करुन आपळे लाभ देणार. तुमचा साठी–जनवरी, मार्च, अप्रेल, जून, अगस्त सितम्बर महिना विशेष घटणे चा महिना आहे आपण कोण पण नवीन कार्य शुरु करा जेह्वा दिवस, तारीख, मास, ईस्वी सन् वगेरे भाग्यांक आणि मूळांक मेळ करतात त्या समया वर सर्व कार्य शुभ होतात. मूळांक 8 आणि भाग्यांक 6 चा प्रभावा पासून ही अंक ज्यांचा योग– 1, 3, 4, 6, 8, 9 आहे असे अंक विशेष घटणे साठी आहे. 1 – 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73. 3 – 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75. 4 – 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67, 76. 6 – 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69, 78. 8 – 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71, 80. 9 – 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72वर लिहेला वर्ष आपण लक्षात ठेवा असे वर्ष जीवना चे महत्व पूर्ण वर्ष आहे ह्या वेळ काही विशेष घटणे आणि परिवर्तन होणार तसेच काही घटणे स्मारक होणारी.

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप

हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म मिथुन लग्नामध्ये झाला आहे. स्वभावाने आपण विनम्र, उदार व हसतमुख व्यक्ती असाल. चेहऱ्यावर बुद्धिमत्तेचे तेज दिसत असते आणि दुसऱ्यांचा मनातील गोष्ट समजण्यात चतुर असाल. त्यामुळे सर्व लोक प्रभावित होऊन आपल्याला सन्मान देतील. आपल्यामध्ये चंचल भाव असल्याने एखादा नवा विचार डोक्यात येताच डोळ्यांमध्ये विशेष चमक येते. चेष्टामस्करी करणे तुमच्या स्वभावाचे वैशिष्ट्य आहे. स्वाभिमानी असाल. भावंडे, मित्रांना मदत करण्याची प्रवृत्ती असेल आणि वेळोवेळी तशी देताही. दानशूर व्यक्ती आहात. भौतिक संसाधने प्राप्त करून त्याचा सुखाने उपभोग घ्याल. धनऐश्वर्य, वैभवसंपन्न असाल. शुभ आणि महत्वाच्या कामाबाबतीत हळुहळू विचारपूर्वक पावले टाकणे हा स्वभाव आहे. उतावीळपणा आवडत नाही. शत्रू व विरोधी पक्षाला स्वकर्तृत्वाने पराजित कराल. सरकार किंवा उच्चाधिकार यांशई चांगले संबंध असतील. फॅशन व सौंदर्याकडे आपली तीव्र कल राहील. प्रत्युत्तर देताना खूप विचार करता.

कला व संगीतामध्ये आपल्याला रूची राहील आणि प्रयत्नपूर्वक हे ज्ञान प्राप्त करण्याचा प्रयत्न कराल. आपण कोणतेही काम हाती घेतले तर ते सचोटी आणि प्रामाणिकपणे पूर्ण करण्याचा प्रयत्न कराल. व्यापार, लेखा व कायद्यासंबंधी कामे गांभीर्याने केल्यास त्यात यश लाभेल. त्याचबरोबर लेखन, संपादन किंवा अन्य अध्ययनसंबंधी कार्यामध्ये रूची राहील. मित्रांमध्ये प्रिय असाल. काळानुसार बदलत असल्यामुळे तुमचा यशाचा विशेष सिद्धांत असणार नाही, त्यामुळे राजकारणात यशस्वी होऊ शकता किंवा प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्षरित्या सरकारी कामात आपले योगदान द्याल. विद्वान असाल आणि शास्त्रांचा अभ्यास करण्यात रूची राहील.

अशाप्रकारे आपण सर्व भौतिक सुखसाधनांचा उपभोग घेत उदार प्रवृत्तीने बुद्धिमान, मित्रप्रिय, परोपकारी, सेवापरायण आणि सरळ हृदयी होऊन आपल्या जीवनाचा उपभोग घ्याल. यथोक्तम–

भोगीवदान्यो बहुपुत्रमित्रः सुगूढमंत्रः सधनः सुशीलः।
तस्यास्थिती स्यानृपसन्नि धाने लग्ने भवेद्वै मिथुनामिधाने।।

– जातकाभरणम

अर्थात – मिथुन लग्नाचा जातक भोगी, दाता, पुत्रवान, मित्रवान, उदार स्वभावाचा आणि राजाशी संपर्क असलेला असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मकुंडलीमध्ये द्वितीय भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी आहे. याचा प्रभावामुळे आपण भावुक वृत्तीचे असाल आणि कधी कधी वाचाळपणाही दाखवाल. समाजामध्ये सन्माननीय व्यक्ती असाल आणि लोक आपल्या प्रभावाखाली येतील. वाणीमध्ये माधुर्य असेल आणि आपले विचार स्पष्टपणे मांडण्यात समर्थ असाल, त्यामुळे सर्व लोक आपल्या वाणीने प्रभावीत होतील.

परिवारामध्ये सुखशांती व समृद्धि उत्तम असेल आणि यासाठी आपण नित्य प्रयत्नशील राहाल. त्याचबरोबर संततीपासूनही आपल्याला पूर्ण सुख व सहकार्य मिळत राहील. तुम्हाला चांगले व स्वादिष्ट भोजन आवडते. विशेषतः मिष्टान्न प्रिय आहे, पण त्यामुळे कधी कधी आरोग्याचा तक्रारीला तोंड द्यावे लागेल, म्हणून मिष्टान्न टाळणे चांगले. त्याचबरोबर धार्मिक कार्यासाठी सुद्धा आपण वेळ काढाल. आपल्या विचारांच्या समर्थनार्थ ठोस तर्क मांडाल जेणेकरून तुमचे विचार लोक स्वीकारतील. लाकडाच्या व्यापारातून लाभ होऊ शकतो. पुत्रांवर तुमचे विशेष प्रेम असेल आणि तेही तुमची सेवा करण्यास सदैव तत्पर असतील.

पराक्रम, संबंधी, प्रकाशन, लाहान–प्रवासं

आपल्या जन्मसमयी तृतीय भावामध्ये रविची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक आदर्श विशाल हृदयी आणि साहसी व्यक्ती असाल आणि आपले नातेवाईक, भावंडांवर पूर्ण विश्वास असेल. कोणतेही काम करताना त्यांची मदत व सल्ला घेणे उचित समजता आणि तसेच काम करता. त्याचबरोबर त्यांची सेवा करणे आपले कर्तव्य समजाल. त्यांच्या चुका विसरून त्यांना क्षमा कराल. भावंडांनी आज्ञाधारक व कर्तव्यनिष्ठ असावे अशी आपली अपेक्षा असते. तसे ते वागले नाहीत तर आपण क्रोधित व नाराज होता. या राशीच्या प्रभावामुळे आपण उच्चाधिकार तसेच प्रशासकीय सेवेमध्ये जाऊ शकता.

आपण एक बुद्धिमान पुरूष आहात आणि आपली नजर व स्मरणशक्ती तीक्ष्ण असेल व कोणतीही गोष्ट दीर्घकाळ लक्षात ठेवता. उच्च शिक्षण, दर्शनशास्त्र व लेखन कार्यामध्ये यश मिळवण्याचा प्रयत्न कराल. वाहनादि सुखांचा देखील उपभोग घ्याल. नीति शास्त्राचे अभ्यासक असल्याने पत्रव्यवहार, वृत्तपत्रलेखन, लेखनादि कार्यामध्ये रूची असेल. प्रवास करणे आवडते आणि प्रवासामध्ये कीर्तीसुद्धा प्राप्त होईल. संगीतामध्ये सुद्धा रूची राहील. त्याचबरोबर आपण शूरवीर, मित्रप्रेमी, कधी कधी कटूवक्ता पण निराभिमानी असाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये बुधाची कन्या राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे तुमची आई एक बुद्धिमान महिला असेल आणि परस्पर सामंजस्य राखण्यात कुशल असेल. आपली कर्तव्ये पूर्ण करण्यात कुशल असेल. कुटुंबाच्या सुख व शांतीसाठी सदैव तत्पर असेल पण कधी कधी पतीशी मतभेद होऊ शकतात. मुलांच्या बाबतीत ती खूप संवेदनशील असेल पण त्याचे प्रदर्शन करणार नाही, त्यामुळे तुम्हा भावंडांमध्ये थोडा गैरसमज पसरू शकतो. आईपासून तुम्हाला वाहन किंवा निवाससंबंधी सुख प्राप्त होईल. त्याचबरोबर पैतृक संपत्तीचा उपभोग घ्याल.

तुम्हाला छोटे घर आवडत नाही. घर मोठे असावे अशी आपली इच्छा असते आणि त्या घराला उत्तमप्रकारे सजवून साफसुंदर ठेवण्याकडे आपला कल असेल त्याचबरोबर डामडौल आपल्याला आवडतो. घरामध्ये आपल्याला आनंद व शांती लाभते. तुम्हाला अनेक विषयांचे ज्ञान प्राप्त करण्याची इच्छा असेल आणि वाणिज्य, लेखा किंवा गणिताच्या क्षेत्रात विशिष्ट यश प्राप्त कराल. पण त्याचबरोबर शैक्षणिक क्षेत्रामध्ये कधी कधी आपल्याला असुविधेला तोंड द्यावे लागेल, पण या अडथळ्यांवर मात करत उच्च शिक्षण पूर्ण कराल. मित्र चांगले असणार नाहीत. आयुष्यात चोर किंवा वशीकरण आदि तंत्र प्रयोगाचा त्रास होऊ शकतो. सतर्क राहा.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण आधुनिक विचारसरणीची व्यक्ती असाल आणि सज्जन व दयाभाव मनात असेल. त्याचबरोबर एक बुद्धिमान पुरूषसुद्धा असाल आणि बुद्धिमत्तेचा वापर सुखी व वैभवशाली जीवन घालवण्यासाठी कराल. कल्पनाशक्ती, वैदिक ज्ञान व योग्य दिशा शोधण्याची शक्ती आपल्यामध्ये असेल. तुम्ही प्रेमपुजारी असाल आणि सर्व समाजाप्रति आपल्या मनामध्ये प्रेम व स्नेहभाव असेल, त्यामुळे प्रेमसंबंधात यशस्वी व्हाल. आपले राहणीमान उच्च असेल, इच्छाआकांक्षा उच्च असल्याने पत्नीशी कधी मतभेद होणार नाहीत.

संतती लाभेल आणि त्यापासून आपल्याला पूर्ण सुख व सहयोग प्राप्त होईल पण त्यांच्या शिक्षण, उपजीविका किंवा विवाहासंबंधी समस्या निर्माण होऊन आपण चिंताव्यग्र व्हाल, पण ही समस्या तात्कालिक असल्याने नंतर सर्व काही ठीक होईल. वृद्धावस्थेत संतती आपली सेवा तन, मन, धनपूर्वक करतील. करभरणादि विषयात सतर्क राहावे, सरकारला पूर्ण कर भरणा करावा अन्यथा त्रास होऊ शकतो. आपण व्यक्तिगत आणि सामाजिक जीवनामध्ये प्रसन्न व संतुष्ट असाल आणि सुखाने जगाल. संतती सुंदर असेल आणि आपापल्या क्षेत्रात यश प्राप्त करतील.

रोग, शत्रु, सेवक आणि मामा

आपल्या जन्मसमयी षष्ठ भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे तुम्ही तुमचे आरोग्य निष्कारण चिंता व उतावीळपणामुळे खराब कराल. निरोगी राहण्यासाठी तुम्ही नेहमी सीमित कार्य करावे कारण कामाचा जास्त बोझा अंगावर घेतलात तर आरोग्य बिघडू शकते. सर्वसामान्यपणे थंडीवाऱ्यामुळे सर्दी, तापादि विकार तसेच वृद्धावस्थेमध्ये श्वसनसंबंधी रोगांचा त्रास होऊ शकतो. त्याचबरोबर खांदे किंवा संधीविकार देखील होऊ शकतात. म्हणून आरोग्याची पूर्ण काळजी घ्यावी.

मंगळ हा एक तेजस्वी व उग्र ग्रह आहे, त्यामुळे बोलताना निष्कारण कठोर भाषेचा वापर टाळावा आणि प्रयत्नपूर्वक गोड बोलावे, अन्यथा अनेक प्रकारच्या अनावश्यक समस्या उभ्या होऊ शकतात. आपल्या उन्नतीमध्ये शत्रू नेहमी अडथळे निर्माण करण्याचे प्रयत्न करतील, त्यामुळे जीवन खडतर असेल, पण आपल्या तेजस्वी आणि चातुर्य वृत्तीने शत्रूपक्षाचा निःपात करण्यास समर्थ असाल.

आपले नोकरसुद्धा संतापी वृत्तीचे असतील आणि तुमचे गुह्य लोकांना सांगून तुमची मानहानी करण्याचा प्रयत्न करतील. म्हणून नोकरांवर नजर ठेवावी व त्यांच्यासमोर खाजगी गोष्टी बोलू नयेत. सुखी जीवनासाठी नेहमी खर्च करत राहाल त्यामुळे आर्थिक विषमता उत्पन्न होऊ शकते. आजारानिमित्त कर्ज घ्यावे लागेल आणि ते न फेडल्यामुळे अपमानाला तोंड द्यावे लागेल. कोर्टकचेरीच्या भानगडीत पडू नये, कारण त्यातून लाभापेक्षा हानीच जास्त होईल. मामा–मामीकडून अपेक्षित सुख व सहयोग कमीच लाभेल, पण त्यांची उपेक्षा करू नये. सुंदर, स्वादिष्ट भोजन आपल्याला आवडते आणि मिष्टान्न व खारट पदार्थ जास्त आवडतात. परंतु यांचे प्रमाणाबाहेर सेवन तसेच नशेली पदार्थांपासून दूर राहावे, अन्यथा शारीरिक त्रास होऊ शकतो व वृद्धावस्थेमध्ये त्याचे दुष्परिणाम दिसून येतील.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती, याचा प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, सुशील व बुद्धिमान असेल आणि उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यास समर्थ असेल. आपले जीवन सर्वसाधारणपणे परिवर्तनशील असेल आणि आणि दांपत्यजीवन सौभाग्यसंपन्नपणे सुख व प्रसन्नपणे व्यतित कराल. आपली पत्नी चांगल्या स्वभावाची असेल आणि कुटुंबातील इतरेजनांशी चांगले संबंध ठेवेल. धनु राशी द्विस्वभाव राशी असल्याने जीवनामध्ये वैविध्य आवडते. प्रेमसंबंधामध्ये आधिक्य आपल्यासाठी आनंददायी ठरेल, त्याचबरोबर यामध्येसुद्धा वेळोवेळी बदल घडवत राहाल. आपले विचार प्रथम बुद्धिने आणि नंतर भावनांनी नियंत्रित असतील त्यामुळे प्रेमप्रकरणात धोका होणार नाही.

आपली पत्नीसुध्दा आपल्यासारखीच बुद्धिमान असेल आणि आयुष्यात तुम्हाला पूर्ण सहयोग देईल. कधी कधी आपल्या मनाविरूद्ध तिचे एखादे कार्य आवडणार नाही, त्यामुळे एकमेकांमध्ये तणाव व मतभेद होऊ शकतात. म्हणून अशाप्रकारचे प्रसंग यत्नपूर्वक टाळावेत. तुम्ही स्वतः सुखी कौटुंबिक जीवन व्यतीत करण्यास खूप इच्छुक असाल. तुम्च्यासाठी तूळ, कुंभ आणि मेष राशी किंवा लग्नाच्या जातकाशी विवाह किंवा भागीदारी लाभदायक ठरू शकते. यांच्याशी नाते जोडल्याने कुटुंबामध्ये सुख शांती राहील. एकापेक्षा अधिक मार्गांनी धन व लाभ प्राप्त कराल. म्हणून दलाली, व्यापार व वकील म्हणून यश प्राप्त करू शकता. प्रवास आवडतो.

हुण्डा, बीमा आयुष्य आणि आपघात

आपल्या जन्मसमयी अष्टम भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण व्यावहारिक आणि आधुनिक विचारसरणीचे व्यक्ती असाल आणि ज्योतिष किंवा तंत्र, मंत्रावर विशेष विश्वास असणार नाही. आयुष्यात आपल्या शुभ व महत्वाच्या कामांना स्वकर्तृत्वाने व कष्टाने संपन्न करण्यात मग्न असाल. मित्रांनी सांगितले तरीही ज्योतिषादि विषयांवर आपली रूची असणार नाही. आपल्याला पैतृक संपत्ती भरपूर प्राप्त होईल आणि कष्टाने त्यात वाढ कराल. आपल्या कौशल्याने धनी पुरूष म्हणून ओळखले जाल, पण जुगार किंवा सट्टा आदि अनैतिक गोष्टींचा प्रयत्नपूर्वक त्याग करावा.

विवाहावेळी आपल्याला सासरकडून यथोचित हुंडा प्राप्त होईल तसेच ते लोक तुम्च्यापासून प्रभावित होऊन सामान्यापेक्षा अधिक धन व लाभ, आभूषण आदिची प्राप्ती होईल. यामुळे आपण आरामदायक जीवन व्यतीत करण्यास सफल व्हाल. विम्यापासून आपल्याला लाभ होत असल्याने आपण घर, गाडी किंवा स्वतःचा अवश्य विमा करावा. यातून आपली हानी न होता विम्यातून धनप्राप्ती अधिक होईल. आयुष्यात चोरी आदिंची मोठी घटना घडणार नाही, पण कधी किरकोळ घटना घडू शकतात. यासाठी सुरक्षेच्या घ्ष्टीने मूल्यवान वस्तू सांभाळून ठेवाव्यात. सजग प्रवृत्तीचे असल्याने आयुष्यात दुर्घटना होणार नाही. दीर्घायुषी असाल आणि सुख प्रसन्नपणे जीवन जगाल. निरोगी राहण्यासाठी नित्य व्यायाम करणे आवश्यक आहे.

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा आणि लाम–प्रवास

आपल्या जन्मसमयी नवम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित आहे. याचा प्रभावामुळे आपण धार्मिक प्रवृत्तीचे व्यक्ती असाल आणि धार्मिक साहित्याचे आवडीने अध्ययन कराल त्याचबरोबर उच्च शिक्षण घेण्याकडे कल असेल. आपला मुख्य उद्देश एखादी सिद्धी प्राप्त करून त्याद्वारे समाजात मान सन्मान, धन व कीती प्राप्त होईल. ज्योतिष किंवा तंत्र, मंत्रशास्त्रामध्येसुद्धा आपली आवड असू शकते.

परमेश्वर्रावर आपल्या मनामध्ये पूर्ण श्रद्धा असेल आणि पूर्ण विश्वाससुद्धा असेल. कोणतेही कार्य करायला भाग्य साथ देत असेल तर ते कर्म करून मनुष्य यश प्राप्त करू शकतो, अन्यथा नाही, यावर आपला विश्वास आहे. त्यामुळे आपल्या इष्टदेवतेची नित्य आराधना कराल. आपल्या घ्ष्टीने कुटुंबामध्ये वेळोवेळी धार्मिक कार्य केल्याने मुलांवर चांगले संस्कार होतात. अनेक तीर्थयात्रा कराल. विद्वान व साधु महात्म्यांचा संगतीत आपल्याला प्रसन्नता व आनंद मिळतो.

आपल्याला व्यवसायानिमित्त तसेच मन सुखावणार्‍या दूरच्या प्रवासामधून खूप ज्ञान प्राप्त होईल. अतिथीला देवासारखे मानून त्याची सेवा कराल. नातवांपासून आपल्याला अपेक्षित सुख व आनंद प्राप्त होईल. वास्तवात या जीवनात तुम्ही पूर्वजन्माच्या कर्मांचे फळ प्राप्त करताहात. आपला दर्जा, धनऐश्वर्य, सुख व यश हे सर्व तुम्ही निश्र्चित पूर्वजन्मामध्ये काही चांगली कामे केली आहेत हे दर्शवते. वृद्धावस्थेमध्ये आपल्या मनामध्ये वैराग्याची भावना निर्माण होऊ शकते. याव्यतिरिक्त तुम्ही दैवी कृपेने धनार्जन कराल, तसेच रस्ते, बाग, तलाव व मंदिर आदि परोपकरासाठी बनवाल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे तुमचा तंत्र, मंत्र किंवा ज्योतिषावर विश्वास तसेच त्याचे ज्ञानही असेल. त्याचबरोबर, विज्ञान, लेखा, बॅंक कर्मचारी आदि क्षेत्रात उपजीविका प्राप्त कराल. याव्यतिरिक्त शैक्षणिक संस्था, प्रशासनीक किंवा व्यवस्थापन क्षेत्रामध्ये उपजीविका प्राप्त करू शकतात. तुम्च्या जीवनात महत्वाचे बदल वेळोवेळी घडत जातील आणि सक्रीयतेने, सतर्कतेने व उद्योगी प्रवृत्तीने जीवनाचा पूर्ण आनंद व सुखाचा उपभोग घेण्यास समर्थ राहाल. आपल्यासाठी शेअर ब्रोकर, वकीलीसुद्धा अनुकूल होऊ शकते. आपल्याला प्रवास करायला आवडतो. व्यवसायानिमित्त प्रवास अधिक होतील. त्यामुळे एजंट म्हणूनसुद्धा यशस्वी होऊ शकता.

पैसे कमवण्याचे नवनवीन मार्ग शोधत राहाल आणि त्यात आपल्याला यश मिळेल, तसेच उत्पन्नाचे एकापेक्षा अधिक स्रोत असतील. वडिलांची मदत मिळेल तसेच त्यांच्या मदतीतून आपल्याला उन्नती व लाभ होईल. कधी कधी वडिलांशी वैचारिक मतभेद होऊ शकतात. सरकार व सरकारी अधिकाऱ्यांकडून यथावत मदत लाभेल आणि राजकारणातही यश प्राप्त होईल. आयुष्यभर धार्मिक वृत्तीने, सज्जनांची सेवा करत, परोपकारी, तीर्थाटन व आर्थिक समृद्ध जीवन व्यतीत कराल.

लाभ, मित्र, समाज, मोठा भाऊ आणि आकांक्षा

आपल्या जन्मसमयी एकादश भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असाल आणि आपल्या इच्छा अनेक असतील. या इच्छा आणि आकांक्षा पूर्ती करण्यात काही प्रमाणात आपण यशस्वी व्हाल. आपल्यामध्ये संघटनकौशल्य असेल आणि त्या शक्तीचा वापर करून इतरांना संघटित व नियंत्रण राखून त्यांच्याकडून काम करून घेण्यास समर्थ असाल. म्हणून आपण व्यवस्थापक, पोलिस किंवा लष्करामध्ये विशेष यश मिळवू शकाल. त्याचबरोबर हॉटेलादि व्यवसायामध्येसुद्धा भरपूर पैसा व लाभ प्राप्त करू शकाल. मोठ्या भावंडांकडून वेळोवेळी विशेष मदत मिळेल व संकटकाळी ते आपल्या मदतीस येतील.

चांगले पण खूप मित्र असावेत असे आपल्यास वाटते. त्याचबरोबर साहसी, पराक्रमी निडर व शिक्षित व्यक्तींना मित्र बनवण्यास आपले प्राधान्य असेल. प्रवृत्ती स्वच्छंद असेल पण इतरांबरोबर काम करण्यात आनंद वाटेल. तुमचा सामाजिक संपर्क व्यापक असेल आणि सर्व समाज आपल्याला यथोचित सहयोग व सन्मान देईल. एक आदरणीय व्यक्ती म्हणून ओळखले जाल. उत्पन्नाचे मार्ग अनेक असतील आणि समाजामध्ये विशेष ख्याती व सन्मानाचे योग बनतील. आपली आर्थिक स्थिती चांगली राहील आणि आपल्या कामामधून भरपूर धन व लाभ होत राहील, पण कधी कधी आपल्याला काही अडचणींना तोंड द्यावे लागू शकते. पण सामान्यतः जीवन सुख व प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होईल.

घाटे, बन्धन, कर्जे, आवास परिवर्तन आणि मोक्ष

आपल्या जन्मसमयी द्वादश भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित आहे. याच्या प्रभावामुळे आपले जीवन परिवर्तनशील असेल आणि सामान्यतः आपण आनंदी जीवन जगाल. पैसे कमवण्यासाठी विभिन्न मार्ग शोधण्यात यशस्वी व्हाल. यातून आय उत्तम राहील पण स्वच्छंदपणे धनव्ययसुद्धा होईल. विशेषतः कौटुंबिक मानमरातब तथा विलासी वस्तूंवर अधिक खर्च होईल. कधी कधी गुंतवणूकसुद्धा होईल, ज्याचा आपल्याला भविष्यात लाभ होईल.

आधुनिक भौतिक सुखसाधनांची तीव्र लालसा असेल व त्यावर अधिकांश आय खर्च होईल. यातून आपल्याला मानसिक आनंद, सुख मिळेल. वेळोवेळी लघु, दीर्घ प्रवास करत राहाल. यामध्ये तीर्थयात्रा अधिक असतील. आपला प्रवास बहुतांशी व्यापार किंवा कार्यालयीन कामासंबंधी असेल आणि प्रवास करण्यात आनंद वाटेल. प्रवासामध्ये सक्रीय राहाल तर इच्छित लाभ प्राप्ती होऊ शकते. प्रवासादरम्यान आपली जुने–नव्या व्यक्तींची ओळख होईल आणि प्रत्येक ठिकाणी अनुकूल वातावरण बनवण्यात यशस्वी व्हाल.

आयुष्यात विदेश प्रवाससुद्धा होऊ शकतो आणि त्यातून आपली भाग्यवृद्धी होईल. काही काळानंतर विदेशातसुद्धा भ्रमण कराल जिथे आपले जीवन सुखऐश्वर्य व वैभवयुक्त असेल. आपल्या प्रतिष्ठेत वृद्धी होईल आणि आनंदाने काळ घालवाल.

फलादेश - 2026

यंदा गोचरीने गुरु अष्टम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने पूर्ण कराळ. व त्यात सफळता पण मिळेळ. शत्रु व विरोधक ह्या काळात निर्बळ असतीळ. व्यापार व नोकरीमध्ये किंवा राजकारणात सफळता मिळेळ धन, मान–सन्मान मिळेळ. ह्या काळात अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ज्योतिष किंवा तंत्र–मंत्राची आवड असेळ. व त्याचे ज्ञान मिळवण्यास समर्थ असाळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे उन्नती होऊन मानसिक समाधान मिळेळ. शासन किंवा उच्चाधिकान्यांकडून ळाभ संभवतो. म्हणून हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

शनि ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 01/04/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ चतुर्थ भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहे। पण राहु दशम् भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ अहे, अतः तुमची आकांक्षा पूर्ण होणारी. व्यापार क्षेत्र मधे सफळ होणारे आणि उन्नती करणारे आर्थिक स्थिति चांगळी रहणारी. मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार आणि लाभ होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार आणि परिस्थत शुभ होणारी तसेच आपण शान्ती अनुभव करणारे आणि मित्र पासून सहयोग प्राप्त करणारे. प्रवास पासून लाभ नाय होणार.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः असे समय वर धैर्य

आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

ह्या वर्ष शनि ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। राहु दशम् भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहात पण शनि तृतीय भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः ह्या वेळी अधूरे कार्य पूर्ण नाय होणार तसेच इच्छित परिणाम नाय भेंटणार. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच मिळकत कमी होणारी, कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणार असा समय व्यापार साठी अनुकूल नाय रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी तसेच सहयोग नाय भेंटणार, मित्र बरोबर वांछित लाभ नाय भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साझेदारांचा कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे. नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होऊ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होणार. अतः धैर्य बरोवर समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

ह्या वर्ष शनि ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। राहु दशम् भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहात पण शनि तृतीय भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः आपण शुभ अवसर प्राप्त करणारे जूने कार्य पूर्ण होणारे आणि महत्वाकांक्षा उत्पन्न होणारी. विशेष माणूस बरोवर सम्बन्ध स्थापित होणार अतः भविष्य साठी लाभ होणार आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती रहणार आणि कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. समाजातीळ सम्मान, यश, प्राप्त होणार आणि समाज प्रभावित होणार. काही तरी फायदे साठी प्रवास सम्पन्न होणारी. आणि सम्मान प्राप्त होणार शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु दशम स्थानात असेळ. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे राहीळ. व्यापार किंवा नोकरीत ह्या काळात उन्नती संभवते. त्याचबरोबर उच्चाधिकारी व राजकारणी ळोकांशी चांगळे संबंध बनतीळ. फळतः त्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळेळ. कौटुम्बिक सुख–समृद्धीकरता हे वर्ष चांगळे असेळ. सर्व जण प्रेमाने रहातीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व धनप्राप्ती संभवते. ह्या काळात विभांती मिळणार नाही. सांसारिक जबाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात शाळीन व्यवहार ठेवावा. अन्य गोचरफळ अशुभ पण दशा शुभ फळे देईळ. म्हणून सामान्यतः हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने शनी यंदा पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. दृष्टिकोनात बदह संभवतो. त्याचबरोबर सांसारिक कार्ये परिश्रम व उत्साहाने सम्पन्न कराळ व त्यात कमीजास्त प्रमाणात सफळता पण मिळेळ. अन्य ळोकांशी संबंध सामान्य असतीळ व मान मिळेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. संतती सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ते आपल्या कार्यक्षेत्रात सफळता मिळवतीळ. त्याचबरोबर कौटुंबिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होऊ शकते.ह्या काळात अन्य गोचर चांगळे असेळ पण दशा विशेष अनुकूळ नसेळ त्यामुळे महत्वाच्या कामात अडथळे येऊ शकतात. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. ह्या वर्षी राजकीय ळोकांशी संपर्क येऊ शकतो. पण त्यांच्यापासून ळाभ कमीच होईळ. त्यामुळे कष्टपूर्वक कार्य सम्पन्न करण्यास तत्पर असावे.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

ह्या वर्ष शनि ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। राहु दशम् भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहात पण शनि तृतीय भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार, अतः आपण ह्या वेळी सगड़े उन्नति करणारे. व्यापार मधे इच्छित सफळता प्राप्त करणारे आणि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहणारी तसेच मिळकत अर्जित करणारे. जर आपण नौकरी मधे असणारे तर पदोन्नति होउ सकतो आणि विशेष अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी उत्तम रहणारी आणि परस्पर सहयोग पण भेंटणार. घरगुती समान खरेदी साठी खर्चे करणारे आणि

विशिष्ट माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार तसेच वांछित लाभ होणार. अतः असे समय वर प्रयत्न क न शुभ अवसर प्राप्त करावे. मांगळिक उत्सव होणार आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी.

फलादेश - 2030

यंदा गोचरीने गुरु अकराव्या भावात आहे. म्हणून हे वर्ष तुमच्चासाठी अत्यंत चांगळे व सौभाग्यकारक असेळ. ह्या काळात तुम्ही भरपूर प्रमाणात धन प्राप्त कराळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. व्यापारात वा नोकरीत अपेक्षित सफळता मिळेळ. नोकरीत किंवा राजकारणात बढ़तीची शक्यता आहे. ज्योतिषशास्त्रावरचा तुमचा विश्वास वाढेळ, मानसिक संतुष्टि नुभवाळ. सामाजिक क्षेत्रात प्रतिष्ठा वाढेळ व कीर्ति दूरवर पसरेळ. ज्यामुळे ळोकांवर प्रभाव पडेळ. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचरफळ व दशाफळ पण चांगळे आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

यंदा शनी सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात महत्वाचे प्रवास सम्पन्न होतीळ व व्यापारात किंवा नोकरीत सफळता मिळेळ. आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनळाभ संभवतो. व्यापारात उन्नती पथावर अग्रेसर व्हाळ. शत्रु भयभीत असेळ. एखाद्या स्पर्धात्मक परिक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण चांगळी आहे. त्यामुळे हे वर्ष सौभाग्यकारक असून प्रसन्नपणे समय व्यतीत कराळ. त्याशिवाय सामाजिक प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्वत्र आदर मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीह व मानसिकदृष्टया पण स्वस्यता असेळ. ह्या काळात तुम्ही परदेशी जाळ किंवा दूरचे प्रवास कराळ. ह्या काळात प्रवासावर जास्त खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीवर जास्त लक्ष द्याळ. ह्या वर्षी आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. केतूच्या प्रभवाने शत्रूवर विजय मिळवाळ. समाजत ळोक तुमचे प्रभुत्व स्वीकारातीळ. ज्यामुळे प्रतिष्ठा वाढेळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. ह्याशिवाय गोचर व दशा ह्या काळात शुभ असल्याने वर्ष चांगळे जाईळ.

फलादेश - 2031

गोचरीने गुरु यंदा बाराव्या भावात असेळ. प्रकृती मध्यम असळी तरी मानसिकदृष्टया अशांती अनुभवाळ. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. खर्च वाढता असल्याने त्रास होईळ. यंदा एरवादे मंगळ कार्य घडेळ ज्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत उन्नतीकरता कष्ट करावे ळागतीळ व कमीअधिक प्रमाणात सफळता मिळेळ. यंदा प्रवास संभवतात. त्याचबरोबर खर्च वाढल्याने आर्थिक विषमता राहीळ. पण भविष्यात लाभ संभवतो.त्याचबरोबर या काळात अन्य गोचर शुभ पण दशा मध्यम असेळ. सांसारिक कार्यात कष्टानेच ळाभ व सुखप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर प्रयत्नपूर्वक मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत तथा दानादि करावे.

गोचरीने शनी यंदा सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ. यंदा व्यापारात किंवा नोकरीत इच्छित सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनप्राप्ती होईळ. ह्या काळात व्यापारात आश्चर्यजनक व उन्नतीकारक परिवर्तन होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर नोकरीत महत्वाचे पद मिळेळ. ह्या काळात ळाभदायक प्रवास सम्पन्न काराळ. ज्यामुळे तुमचा प्रभाव वाढेळ. ह्या काळात शत्रूळा पराजित कराळ. एरवाद्या स्पर्धात्मक परीक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभ असल्याने क्वचित्प्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमी जाणवेळ पण कष्ट व बुधीच्या जोरावर तुम्ही इच्छित सफळता मिळावाळ.

यंदा गोचरीने राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मिश्रित (शुभाशुभ) फळे देईळ. ह्या काळात प्रकृती मध्यम असेळ. मानसिक चिंता सतावतीळ. दूरवरचे प्रवास किंवा परदेशी जाण्याचा योग आहे. ज्यावर खर्च अधिक होईळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्यामुळे आर्थिक त्रास संभवतो. पण हाव्या भावातीळ केतूमुळे कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात शत्रूंवर विजय मिळवाळ. पण डोळयाचे विकार होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ पण दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळेही मिळतीळ.

फलादेश - 2032

गुरु ह्यावर्षी गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या शुभ प्रभवाने तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. कौटुम्बिक सुखशान्ती व समृद्ध ीकरता हे वर्ष चांगळे आहे. ळोक प्रेमाने वागतीळ. ह्यावर्षी तुम्हाळा पुत्रप्राप्ती संभवते. खर्च वाढल्याने मन खिन्न असेळ. सामाजिक प्रतिष्ठेकरता हे वर्ष शुभ असेळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून आदर मिळवाळ. धार्मिक कार्यांची आवड निर्माण होईळ व वाणीमध्ये माधुर्य व ओजस्विता वाढेळ. अन्य ळोक तुमच्या बोळण्याने प्रभावित होतीळ. ह्यावर्षी माळमन्ता व व्यापारात इच्छित ळाभ मिळवाळ. पण यंदा अन्य गोचरफळ जास्त शुभ नसेळ व अशुभ फळे मिळतीळ. पण दशाफळ अनुकूळ असेळ. तथापि कधी–कधी उपर्युक्त चांगल्या फळांमध्ये न्यूनता येईळ, पण अत्यधिक परिश्रम व संघर्षानी चांगळी फळे मिळतीळ.

गोचरीने यंदा शनीची स्थिती सातव्या भावात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुम्ही पराक्रम व कष्टाने कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. नोकरी किंवा राजकारणात एखादी सफळता मिळू शकते. ह्या काळात पत्नी व आईची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर कवचित्प्रसंगी परस्पर संबंधात तणाव निर्माण होतीळ. चिंतीत असाळ. पण दैनंदिन कार्ये कष्टपूर्वक सम्पन्न कराळ, व त्यात सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ पण भविष्यात ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर प्रवासाचे योग आहेत. पण त्यातून ळाभ कमी व खर्च जास्त होईळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ शुभ परंतु दशा विशेष अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडथळे येतीळ. पण त्यातून मार्ग काढाळ व सफळता मिळावाळ. त्याचबरोबर तुम्ही घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादी योजना बनवू शकता.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

फलादेश - 2033

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

गोचरीने यंदा शनीची स्थिती सातव्या भावात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुम्ही पराक्रम व कष्टाने कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. नोकरी किंवा राजकारणात एखादी सफळता मिळू शकते. ह्या काळात पत्नी व आईची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर कवचित्प्रसंगी परस्पर संबंधात तणाव निर्माण होतीळ. चिंतीत असाळ. पण दैनंदिन कार्ये कष्टपूर्वक सम्पन्न कराळ, व त्यात सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ पण भविष्यात ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर प्रवासाचे योग आहेत. पण त्यातून ळाभ कमी व खर्च जास्त होईळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ शुभ परंतु दशा विशेष अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडथळे येतीळ. पण त्यातून मार्ग काढाळ व सफळता मिळावाळ. त्याचबरोबर तुम्ही घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादी योजना बनवू शकता.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

फलादेश - 2034

गोचरीने गुरु यंदा चतुर्थ भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात शारीरिकदृष्टया तुम्ही सुखी असाळ. कौटुम्बिक सुखात वाढ होईळ. व सर्व ळोक मिळून मिसळून वागतीळ. ह्या वर्षी तुमच्या योजना पूर्ण होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नतीकरता हे वर्ष शुभ व अनुकूळ असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. जवळचे ळोक प्रशंसा करतीळ व प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या वर्षी माळमत्ता व घराच्या दृष्टीने सुख व ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर आई व सासवरच्या ळोकांकडून सहकार्य व ळाभ होऊ शकतो. गोचरफळ ह्या काळात अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून उपर्युक्त फळांमध्ये कमतरता राहीळ. पण परिश्रमाने त्यात तुम्ही सफळता मिळवू शकता.

गोचरीने यंदा शनीची स्थिती सातव्या भावात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुम्ही पराक्रम व कष्टाने कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. नोकरी किंवा राजकारणात एखादी सफळता मिळू शकते. ह्या काळात पत्नी व आईची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर कवचित्प्रसंगी परस्पर संबंधात तणाव निर्माण होतीळ. चिंतीत असाळ. पण दैनंदिन कार्ये कष्टपूर्वक सम्पन्न कराळ, व त्यात सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ पण भविष्यात ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर प्रवासाचे योग आहेत. पण त्यातून ळाभ कमी व खर्च जास्त होईळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ शुभ परंतु दशा विशेष अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडथळे येतीळ. पण त्यातून मार्ग काढाळ व सफळता मिळावाळ. त्याचबरोबर तुम्ही घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादी योजना बनवू शकता.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

फलादेश - 2035

हयावर्षी गुरु गोचरीने पंचम भवात असेळ. हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा व महत्वाचा असेळ. हया वेळी तुमची रुची ज्ञानार्जनात असेळ व विभिन्न विषयांचे तुम्ही अध्ययन कराळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व मिळकतीच्या साधनांतमध्ये वाढ होऊन धनवृद्धी संभवते. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांची संभावना आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रातीळ उन्नतीसाठी काळ अनुकूळ आहे. हया काळात मंत्री किंवा उच्चधिकान्यांशी संबंध स्थापित होतीळ व त्यापासून ळाभ होईळ. हया काळात मुळांकडून सुख व सहकार्य मिळेळ. त्याचबरोबर यंदा मिळकतीच्या दृष्टीने गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे चांगल्या व महत्वाच्या कामांसाठी काळ चांगळा आहे.

यंदा गोचरीने शनी अष्टम भावात असेळ. त्यामुळे सामान्यतः हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. हया काळात प्रकृती सामान्य असेळ. महत्वाची कार्ये उत्साहाने व पराक्रमाने सम्पन्न कराळ. पत्नीची प्रकृती ठीक राहीळ व कौटुंबिक सुख मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. हया काळात कुटुंबातीळ ळोकांशी, भवंडे व मित्रांशी संबंध सामानय असतीळ. त्याचबरोबर कष्टपूर्वक उन्नती संभवते. यंदा अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असल्याने कार्यसिद्धी होईळ. मानसिक समाधान मिळेळ. पण शनीच्या दशेचा प्रभाव कमीअधिक प्रमाणात दिसेळ. जरी विशेष दुष्परिणम नसळा तरी अनुकूळते साठी शनीच पूजा व दान नियमितपणे करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. हया काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. हया काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(18/08/2012 - 19/08/2031)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 18/08/2012 को आरम्भ और 19/08/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादूर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(20/02/2025 - 01/04/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 18/08/2012 को प्रारंभ होकर 19/08/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 20/02/2025 को प्रारंभ होकर 01/04/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में चौथे भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

चौथे भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 7, 10, 11 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता से संबंधों में कुछ गिरावट आ सकती है। हो सकता है कि आपको घर से दूर रहना पड़े। वाहन सुख रहेगा। राजनीति में सफलता मिल सकती है पर बाधाओं को पार करना होगा।

आप मंगली हैं, अतः आपके जीवनसाथी भी मंगली हों, तो श्रेयस्कर होगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

अंर्तदशा :- शनि - राहु
(01/04/2026 - 05/02/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/08/2012 को प्रारंभ होकर 19/08/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 01/04/2026 को प्रारंभ होकर 05/02/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी और सफल होंगे। विषय-वासना में अधिक रुचि हो सकती है। खूब यात्राएं कर सकते हैं, जिसके कारण भौतिकता में रुचि अधिक होगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - गुरु
(05/02/2029 - 19/08/2031)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 18/08/2012 को प्रारंभ होकर 19/08/2031को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 05/02/2029 को प्रारंभ होकर 19/08/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप अप्रसन्न हो सकते हैं, मगर दयालु होंगे। पापकर्मों में लिप्त हो सकते हैं मगर दिखावा करेंगे कि बहुत धर्मात्मा हैं। विषय-वासना में रुचि हो सकती है। प्रत्येक कदम सावधानी से उठाना आवश्यक है, अन्यथा बदनाम हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल, अंगूठी को कच्चे दूध से धोकर, प्रार्थना और बृहस्पति मंत्र के 99 जाप के बाद, दायें हाथ की तर्जनी में धारण करें।

योग

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,केतु,शुक्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–41

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–47

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–49

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–1

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–3

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–3

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिक
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.–९

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–1

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,शुक्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–1

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6 / श्लो.–3

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6 / श्लो.–4

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.–14 / श्लो.–

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,गुरु,शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।